।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

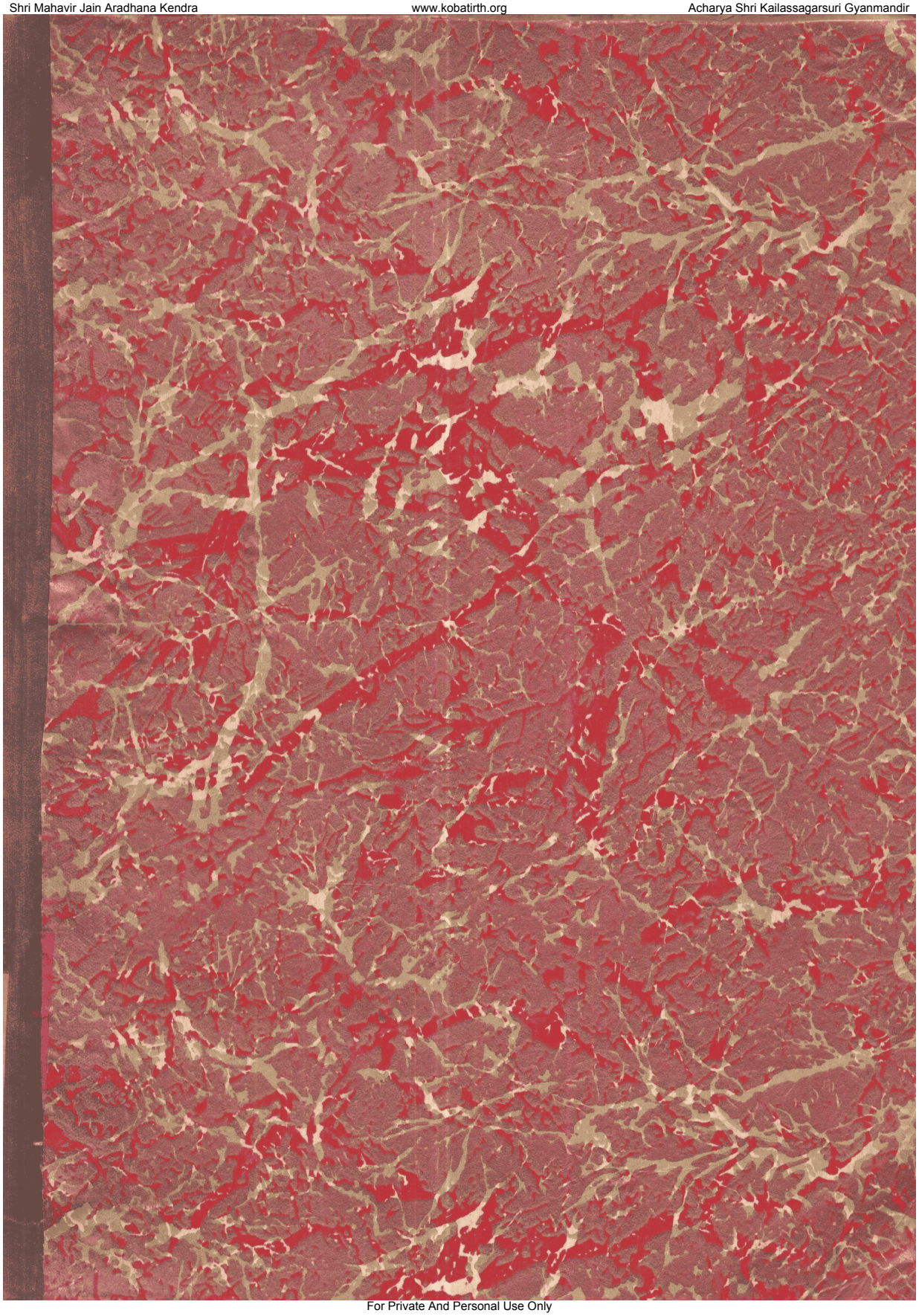

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैनसाहित्यसंशोधकग्रन्थमाला

आचाराङ्ग-सूत्रम्

मूलपाठ–विशिष्ट पाठभेद–शब्दकोष–समन्वितम्

(प्रथमः श्रुतस्कन्धः)

जैन साहित्य संशोधक समिति

पूना शहर, (दक्षिण)

नम्र सूचन

इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत
समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें.
जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

JAINA-SAHITYA-SAMSODHAKA-GRANTHAMALA

ĀCHĀRĀNG-SŪTRAM

[*FIRST SRUTASKANDHA.*]

Text in Devanagari with various readings and a glossary.

Based upon the German edition of Dr. Walter Schubring, Leipzig.

Published by

THE JAINA SAHITYA SAMSODHAKA SAMITI.

Poona City (India

1924.

Mahavira Samvat 2450.] [Vikrama Samvat 1980.

For Private And Personal Use Only

पुण्य-स्मरण अने धन्यवाद

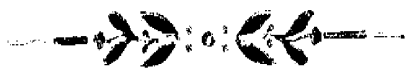

आ ग्रन्थ प्रकाशित करवा माटे, अमदावाद निवासी स्वर्गस्थ सेठ कालिदास
मल्लीचंदनी धर्मपत्नी श्राविका मंगुबाइए, पोताना पतीना पुण्यस्मरणार्थ
जे द्रव्य सहायता आपी छे, ते बदल तेमने धन्यवाद घटे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra
www.kobatirth.org
Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचाराङ्ग-सूत्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन साहित्यसंशोधक ग्रन्थमाला

आचाराङ्ग-सूत्रम्

मूलपाठ–विशिष्ट पाठभेद–शब्दकोष–समन्वितम्

(प्रथमः श्रुतस्कन्धः)

जर्मनराष्ट्रनिवासि–डॉक्टर–इत्युपाधिधारि–वाल्टर शुब्रिंग–नामधेयेन विद्वद्वरेण
संशोधितं, जर्मन–देशान्तर्गत–लाइप्जिग–नगर संस्थित–
प्राच्यविद्या-गवेषक-समितिद्वारा रोमनलिप्यां
प्रकटीभूतं च पुस्तकमनुसृत्य

भारतवर्षान्तर्गत–

पुण्यपत्तन–संस्थापित

जैन साहित्य संशोधक समिति

नामकसंस्थायाः सञ्चालकेन देवनागराक्षरैः प्रकटी कृतम्

महावीर निर्वाणाब्द २४५०] [विक्रम संवत्सर १९८०.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशकः—**मुनि तिलकविजय**, भारत जैन विद्यालय, पूना शहर.

मुद्रकः—**लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे**, हनुमान प्रेस, ३०० सदाशिव पेठ, **पूना शहर.**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ आयारंग-सुत्तं ॥

॥ 'बम्भचेराइं' नाम पढमो सुयक्खन्धो ॥

स त्थ प रि न्ना

१–१

(१) सुयं मे, आउसं, तेणं भगवया एवमक्खायं:—

इहमेगेसिं नो सन्ना भवइ, (२) तं-जहा: 'पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, दाहिणाओ वा दिसाओ...., पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ....,उत्तराओ वा दिसाओ...., उड्ढाओ वा दिसाओ...., अहेदिसाओ वा...., अन्नयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि'—एवमेगेसिं नो नायं भवइ: (३) 'अत्थि मे आया उववाइए, नत्थि मे आया उववाइए? के अहं आसी के वा इओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि?'। (४) से ज्जं पुण जाणेज्जा सह-सम्मुइयाए पर-वागरणेणं अन्नेसिं वा अन्तिए सोच्चा, तं-जहा :— 'पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि **जाव** अन्नयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि'—एवमेगेसिं नायं भवइ :—'अत्थि मे आया उववाइए; जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सोऽहं'।

(५) से आया-वाई लोगा-वाई कम्मा-वाई किरिया-वाई य।

'करिस्सं च'हं कारावेस्सं च'हं करओ यावि समणुन्ने भविस्सामि'—एयावन्ती सव्वावन्ती लोगंसि कम्म-समारम्भा परिजाणियव्वा भवन्ति। (६) अपरिन्नाय कम्मे खलु अयं पुरिसे, जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेइ, अणेग-रूवाओ जोणीओ सन्धेइ, विरूव-रूवे फासे पडिसंवेएइ। (७) तत्थ खलु भगवया परिन्ना पवेइया इमस्स चे'व जीवियस्स परिवन्दण-माणण-पूयणाए, जाइ-मरण-मोयणाए दुक्ख-पडिघाय-हेउं—एयावन्ती सव्वावन्ती लोगंसि कम्मसमारम्भा परिजाणियव्वा भवन्ति। जस्से'ए लोगंसि कम्म-समारम्भा परिन्नाया भवन्ति, से हु मुणी परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१–२

(१) अट्टे लोए परिजुण्णे दुस्संबोहे अविजाणए।
अस्सिं लोए पव्वहिए
तत्थ-तत्थ पुढो पास आउरा परियावेन्ति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२) सन्ति पाणा पुढो-सिया ।
लज्जमाणा पुढो पास ।
" अणगारा मो " त्ति एगे पवयमाणा ।

जमिणं विरूव-रूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्मसमारम्भेणं पुढवि-सत्थं समारम्भमाणे अन्ने
5 व' णेगरूवे पाणे विहिंसइ—(३) तत्थ खलु भगवया परिन्ना पवेइया इमस्स चे'व जीविस्स परिवन्दण-माणण-पूयणाए, जाइ-मरण-मोयणाए दुक्ख-पडिघाय-हेउं — से सयमेव पुढवि-सत्थं समारम्भइ अन्नेहिं वा पुढवि-सत्थं समारम्भावेइ अन्ने वा पुढवि-सत्थं समारम्भन्ते समणुजाणइ; (४) तं से अहियाए, तं से अबोहीए । से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं, समुट्ठाए — सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अन्तिए इहमेगेसिं नायं भवइ : एस खलु
10 गन्थे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु नरए ।

इच्चत्थं गढिए लोए ।

जमिणं विरूव-रूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्मसमारम्भेणं पुढवि-सत्थं समारम्भमाणे अन्ने वणे'ग-रूवे पाणे विहिंसइ—

(५) से बेमि: अप्पेगे अच्चमब्भे,अप्पेगे अच्चमच्छे;अप्पेगे पायमब्भे,अपेगे पायमच्छे;....
15 गुप्फं....जंघं....जाणुं....ऊरुं.... कडिं....नाभिं ....उयरं ....पासं ....पिट्ठिं....उरं....हियय....थणं....खन्धं....बाहुं....हत्थं....अंगुलिं....नहं....गीवं....हणुं....होट्ठं....दन्तं....जिब्भं....तालुं ....गलं....गण्डं....कण्णं....नासं....अच्छिं....भमुहं....निलाडं....सीसं....; अप्पेगे संपमारए अप्पेगे उद्दवए ।

(६) एत्थ सत्थं समारम्भमाणस्स इच्चेए आरम्भा अपरिन्नाया भवन्ति, एत्थ सत्थं
20 समारम्भमाणस्स इच्चेए आरम्भा परिन्नाया भवन्ति । तं परिन्नाय मेहावी नेव सयं पुढवि-सत्थं समारभेज्जा नेव'न्नेहिं पुढवि-सत्थं समारम्भावेज्जा नेव'न्ने पुढवि-सत्थं समारभन्ते समणुजाणेज्जा । जस्से'ए पुढवि-कम्म-समारम्भा परिन्नाया भवन्ति, से हु मुणी परिन्नाय-कम्मे —त्ति बेमि ॥

१–३

(१) से बेमि : से जहा वि—
अणगारे उज्जुकडे नियाग-पडिवन्ने अमायं कुव्वमाणे वियाहिए ।
25 (२) जाए सद्धाए निक्खन्तो, तमेव अणुपालिया;
वियहित्तु विसोत्तियं
पणया वीरा महा-वीहिं
लोगं च आणए अभिसमेच्चा अकुओभयं ।

(३) से बेमि:—ने'व सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, नेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा । जे लोगं
30 अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ, जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोगं अब्भाइक्खइ ।

(४–६) 'लज्जमाणा....(यथा पं० २-१३. नवरं **पुढवि** स्थाने **उदय** भणनीयं)...
विहिंसइ—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७) से बेमि : सन्ति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।
इहं च खलु भो अणगाराणं उदयं जीवा वियाहिया ।
सत्थं चेत्थ अणुवीइ, पास पुढो सत्थं पवेइयं :
अदु वा अइन्ना'याणं :
" कप्पइ णे कप्पइ णे पाउं",
अदु वा विभूसाए पुढो सत्थेहिं विउट्टन्ति । एत्थ वि तेसिं नो निकरणाए ।
(८) एत्थ सत्थं....(यथा २, १९-२२. नवरं **पुढवि** स्थाने **उदय** भणनीयं)...परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-४

(१-२) से बेमि : ने'व सयं... (यथा २, २९-३०.)... लोगं अब्भाइक्खइ । जे दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने; जे असत्थस्स खेयन्ने, से दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने ।
(३) वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं
संजएहिं सया जएहिं सया अप्पमत्तेहिं :
जे पमत्ते गुणट्ठिए, से हु दण्डे पवुच्चइ ;
तं परिन्नाय मेहावी " इयाणिं नो,
जमहं पुव्वमकासी पमाएणं " ।
(४-५) ' लज्जमाणा ...(यथा २, २-१३. नवरं **पुढवि** स्थाने **अगणि** भणनीयं)....विहिंसइ—
(६) से बेमि : सन्ति पाणा पुढवि-निस्सिया तण-निस्सिया पत्तनिस्सिया कट्ठ-निस्सिया गोमय-निस्सिया कयवर-निस्सिया, 'सन्ति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयन्ति य'। अगणिं च खलु पुट्ठा एगे संघायमावज्जन्ति; जे तत्थ संघायमावज्जन्ति, ते तत्थपरियाविज्जन्ति; जे तत्थ परियाविज्जन्ति, ते तत्थ उद्दायन्ति ।
(७) एत्थ सत्थं....(यथा २, १९-२२. नवरं **पुढवि** स्थाने **अगणि** भणनीयं) .... परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-५

(१) "तं नो करिस्सामि समुट्ठाए
मत्ता मइमं अभयं विइत्ता ।
तं जे नो करए, एसोवरए; एत्थोवरए एस अणगारे त्ति पवुच्चइ ।
(२) जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे : उड्ढं अहं तिरियं पाईणं पासमाणे रूवाइं पासइ, सुणमाणे सद्दाइं सुणइ; (३) उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छइ सद्देसु यावि ।
एत्थ अगुत्ते अणाणाए । एस लोए वियाहिए
पुणो-पुणो गुणासाए वंक-समायारे पमत्ते गारमावसे ।
(४-५)'लज्जमाणा....(यथा २,२-१३.नवरं **पुढवि** स्थाने **वणस्सइ** भणनीयं)...विहिंसइ—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६) से बेमि : इमं पि जाइ-धम्मयं, एयं पि जाइ-धम्मयं; इमं पि वुड्ढि-धम्मयं, एयं पि वुड्ढि-धम्मयं;....चित्तमन्तयं....छिन्नं मिलाइ....आहारगं....अनिच्चयं....असासयं.... चयावचइयं....विपरिणाम-धम्मयं ।

(७) एत्थ सत्थं.... (यथा २, १९-२२. नवरं **पुढवि** स्थाने **वणस्सइ** भणनीयं) .... परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-६

(१) से बेमि : सन्ति'मे तसा पाणा, तं-जहा:—अण्डया पोयया जराउया रसया संसेयया सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया ।

एस संसारे त्ति पवुच्चइ

(२) मन्दस्स अविजाणओ ।

निज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिणिव्वाणं

सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिणिव्वाणं । महब्भयं दुक्खं ति बेमि "।

तसन्ति पाणा पदिसो दिसासु य ।

' तत्थ-तत्थ पुढो पास आउरा परियावेन्ति । (३) सन्ति पाणा पुढो-सिया । (४) ' लज्जमाणा .... (यथा २,२-१३. नवरं **पुढवि** स्थाने **तसकाय** भणनीयं) .... विहिंसइ—

(५) से बेमि : अप्पेगे अच्चाए हणन्ति, अप्पेगे अजिणाए वहन्ति,....मंसाए....सोणियाए...., **एवं** हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दन्ताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए—अट्ठाए अणट्ठाए; अप्पेगे 'हिंसिंसु मे' त्ति वा वहन्ति, अप्पेगे ' हिंसन्ति मे ' त्ति वा वहन्ति, अप्पेगे ' हिंसिस्सन्ति मे ' त्ति वा वहन्ति ।

(६) एत्थ सत्थं....(यथा २,१९-२२. नवरं **पुढवि** स्थाने **तसकाय** भणनीयं)... परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

१-७

(१) पहू य एजस्स दुगुञ्छणाए ।

आयंक दंसी ' अहियं ' ति नच्चा ।

जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ; जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ : एयं तुलं अन्नेसिं ।

इह सन्ति-गया दविया नावकंखन्ति जीविउं ।

(२-३) ' लज्जमाणा... (यथा २, २-१३. नवरं **पुढवि** स्थाने **वाउ** भणनीयं) ....विहिंसइ—

(४) से बेमि:

सन्ति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयन्ति य ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फरिसं च खलु पुट्ठा .... (यथा ३, १९-२१) .... उद्दायन्ति ।

(५) एत्थ सत्थं .... (यथा २, १९-२२ नवरं **पुढवि** स्थाने **वाउ** भणनीयं)....

परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

(६) एत्थं पि जाणे उवाईयमाणा

जे आयारे न रमन्ति,

आरम्भमाणा विणयं वयन्ति;

छन्दोवणीया अज्झोववन्ना

आरम्भसत्तां पकरेन्ति संगं ।

से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मन्तं नो अन्नेसिं ।

(७) तं परिन्नाय मेहावी .... (यथा २, २०-२२ नवरं **पुढवि** स्थाने **छाज्जीवनिकाय** भणनीयं) परिन्नाय-कम्मे—त्ति बेमि ॥

लो ग वि ज ओ

२-१

(१) जे गुणे से मूल-ट्ठाणे, जे मूल-ट्ठाणे से गुणे ।

इति से गुणट्ठी

महया परियावेण वसे पमत्ते,

तं-जहाः— ' माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुण्हा मे, सहि-सयण-संगन्थ-संथुया मे, विचित्तोवगरण-परियट्टण-भोयण'च्छायणं मे ' ' इच्चत्थं गढिए लोए ' । ' वसे पमत्ते '

अहो य राओ परितप्पमाणे

कालाकाल-समुट्ठाई संजोगट्ठी अत्थालोभी आलुम्पे

सहसाकारे विनिविट्ठ-चित्ते

' एत्थ सत्थे पुणो-पुणो ' ।

(२) अप्पं च खलु आउं इहमेगेसिं माणवाणं,

तं-जहाः—सोय-परिन्नाणेहिं परिहायमाणेहिं, चक्खु-प० प०, घाण- प० प०, रस-प० प०, फास-प० प०; अभिकन्तं च खलु वयं संपेहाए—तओ से एगया मूढ-भावं जणयन्ति; जेहिं वा सद्धिं संवसइ, ते व णं एगया नियगा पुव्विं परिवयन्ति सो वा ते नियगे पच्छा परिवएज्जा ।

नालं ते तव ताणाए

वा सरणा ए वा, तुमम्पि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा । (३) ' से न हस्साए, न किड्डाए,न रईए,न विभूसाए' इच्चेवं समुट्ठिए 'अहो विहाराए'। अन्तरं च खलु इमं संपेहाए

धीरे मुहुत्तमवि नो पमायए;

वओ अच्चेइ जोव्वणं च जीविए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इह जे पमत्ता,—

से हन्ता छेत्ता भेत्ता लुम्पित्ता विलुम्पित्ता उद्दवेत्ता उत्तासइत्ता 'अकडं करिस्सामि' त्ति मन्नमाणे। जोहिं वा .... (यथा ५, २५–२८. नवरं **परिवयन्ति** तथा **परिवएज्जा** स्थाने **पोसेन्ति** तथा **पोसेज्जा** भणनीयं) ....सरणाए वा। (४) उवाईय-सेसन्तेण वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ इहमेगिसिं माणवाणं भोयणाए। तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जन्ति; जेहिं वा .... (यथा ५, २५–२८. नवरं **परिहरन्ति** तथा **परिहरेज्जा** पठनीयं)...सरणाए वा।

(५) जाणित्तु दुक्खं पत्तेय-सायं
अणभिक्कन्तं च खलु वयं संपेहाए
खणं जाणाहि पण्डिए

जाव सोत्त-परिन्नाणेहिं अपरिहायमाणोहिं, नेत्त-प० अ० , घाण-प० अ०, रस-प० अ०, फास-प० अ०; इच्चेएहिं विरूव-रूवेहिं परिन्नाणेहिं अपरिहायमाणेहिं। आयट्ठं सम्मं समणुवासेज्जासि—त्ति बेमि ॥

२–२

(१) अरइं आउट्टे से मेहावी;
खणंसि मुक्के अणाणाए
पुट्ठा वि एगे नियट्टन्ति मन्दा मोहेण पाउडा:
" अपरिग्गहा भविस्सामो " समुट्ठाए लद्धे कामे'भिगाहइ।
अणाणाए मुणिणो पडिलेहन्ति; एत्थ मोहे पुणो पुणो
सन्ना नो हव्वाए नो पाराए।
विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा पार-गामिणो।
लोभं अलोभेण दुगुञ्छमाणे
लद्धे कामे नो'भिगाहइ।
विणइत्तु लोभं निक्खम्म
एस अकम्मे जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकंखइ, एस
अणगारे त्ति पवुच्चइ।

(२) 'अहो य राओ....(यथा ५, १९–२१)....पुणो-पुणो'से आय-बले, से नाइ-बले, से मित्त–बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अइहि-बले, से किविण-बले, से समण-बले, (३) इच्चेएहिं विरूव-रूवेहिं कज्जेहिं दण्ड-समायाणं संपेहाए भया कज्जइ 'पाव-मोक्खो' त्ति मन्नमाणे अदु वा आसंसाए। तं परिन्नाय मेहावी नेव सयं एएहिं कज्जेहिं दण्डं समारम्भेज्जा, नेव'न्नं एएहिं कज्जेहिं दण्डं समारम्भावेज्जा, नेव'न्नं एएहिं दण्डं समारभन्तं समणुजाणेज्जा। एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, जहेत्थ कुसले नोवलिप्पेज्जासि—त्ति बेमि ॥

२–३

(१) से असइं उच्चा-गोए, असइं नीया-गोए, नो हीणे, नो अइरित्ते : नो पीहए। इति संखाए के गोया-वाई, के माणा-वाई, कंसि वा एगे गिज्झे? (२) तम्हा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण्डिए नो हरिसे, नो कुज्झे
भूएहिं जाण पडिलेह सायं
समिए एयाणुपस्सी,

तं-जहा : अन्धत्तं बहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुण्टत्तं खुज्जत्तं वडभत्तं सामत्तं सबलत्तं, सह पमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ संधेइ, विरूव-रूवे फासे पडिसंवेएइ। (३) से अबुज्झमाणे हओवहए जाई-मरणं अणुपरियट्टमाणे।

जीवियं पुढो पियं इह मेगेसिं माणवाणं खेत्त-वत्थु ममायमाणाणं; आरत्तं विरत्तं मणि-कुण्डलं सह हिरण्णेणं, इत्थियाओ परिगिज्झ तत्थेव रत्ता, न एत्थ तवो वा दमो वा नियमो वा दिस्सइ;

संपुण्णं बाले जीविउ-कामे लालप्पमाणे
मूढे विप्परियासु'वेइ।
(४) इणेमव नावकंखन्ति जे जणा धुव-चारिणो;
जाई-मरणं परिन्नाय चरे संकमणे दढे।
नत्थि कालस्सणागमो—सव्वे पाणा पिया'ऊया
सुह-साया दुक्ख-पडिकूला
अप्पिय-वहा पिय-जीविणो जीविउ-कामा। सव्वेसिं जीवियं पियं,
(५) तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं
अभिजुञ्जियाणं संसंचियाणं

तिविहेणं—जा वि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गढिए चिट्ठइ भोयणाए। तओ से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवइ, तं पि से एगया दायादा विभ-यन्ति, अदत्तहारो वा से अवहरइ, रायाणो वा से विलुम्पन्ति; नस्सइ वा से, विनस्सइ वा से, अगार-दाहेण वा से डज्झइ। इति से परस्सट्ठाए

कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासु'वेइ।

मुणिणा हु एयं पवेइयं :

अणोहन्तरा एए, नो य ओहं तरित्तए ;
अतीरंगमा एए, नो य तीरं गमित्तए ; अपारंगमा एए, नो य पारं गमित्तए।
आयाणिज्जं च आयाय तम्मि ठाणे न चिट्ठइ,
वितहं पप्प'खेयन्ने तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ।

उद्देसो पासगस्स नत्थि; बाले पुण निहे काम-समणुन्ने असमिय-दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टमणुपरियट्टइ—त्ति बेमि ॥

२–४

(१) तओ से एगया....(यथा ५, १५–२८. नवरं **परिहरन्ति** तथा **परिहरेज्जा** स्थाने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिच्चजन्ति तथा **परिच्चएज्जा** भणनीयं)... सरणाए वा ।

(२) जाणितु दुक्खं पत्तेय-सायं

भोगामेव अणुसोयन्ति—इह मेगेसिं माणवाणं—तिविहेणं....(यथा७,१९–२२.नवरं **अवहरइ** स्थाने **हरइ** भणनीयं)....विप्परियासुवेइ':—

(३) आसं च छन्दं च विगिंच धीरे, तुमं चेव,
तं सल्लं आहट्टु; जेण सिया, तेण नो सिया ।
इणमेव नावबुज्झन्ति जे जणा मोह-पाउडा ।

थीभि लोए पव्वहिए; ते भो वयन्तिः " एयाइं आययणाइं " । से दुक्खाए मोहाए माराए नरगाए नरग-तिरिक्खाए ! सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ ।

उयाहु वीरेः अप्पमाओ महा-मोहे !

(४) अलं कुसलस्स पमाएणं सन्ति-मरणं सँपेहाए, भेउर-धम्मं सँपेहाए !
" नालं पास "—अलं तव एएहिं !
एयं पास, मुणी, महब्भयं, नाइवाएज्ज कंचणं ।
एस वीरे पसंसिए, जे न निव्विज्जइ आयाणाए:
' न मे देइ ' न कुप्पेज्जा, थोवं लध्दुं न खिंसए,
पडिसेहिओ परिणमेज्जा ।
एयं मोणं समणुवासेज्जासि—त्ति बेमि ॥

२–५

(१) जमिणं विरूव-रूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्म-समारम्भा कज्जन्ति, तं-जहाः अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं नाईणं धाईणं राईणं दासाणं दासीणं कम्म-करीणं कम्म-करीणं आएसाए, पुढो पहेणाए, सा'मासाए पायरासाए सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ (२) इह मेगेसिं माणवाणं भोयणाए

समुट्ठिए अणगारे आरिए आरिय-पन्ने आरिय-दंसी
' अयं संधी ' ति अद्दक्खु से नाइए नाइयावए न समणुजाणाइ ।
सव्वामगन्धे परिन्नाय निरामगन्धे परिव्वए ।

(३) अदिस्समाणे कय-विक्कएसु

से न किणे, न किणावए, किणन्तं न समणुजाणए । से भिक्खू कालन्ने बलन्ने मायन्ने खेयन्ने खणयन्ने विणयन्ने स-समयन्ने पर-समयन्ने भावन्ने,

परिग्गहं, अममायमाणे,
काले'णुट्ठाई अपडिन्ने, दुहओ
छित्ता नियाइ ।

वत्थं पडिग्गहं,
कम्बलं पाय-पुञ्छणं ओग्गहं च कडासणं;

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एएसु चेव जाणेज्जा
लद्धे आहारे अणगारो मायं जाणेज्जा
से जहे'यं भगवया पवेइयं :
लाभो ' त्ति न मज्जेज्जा, अलाभो ' त्ति न सोयए,
बहुं पि लद्धुं न निहे। 5
परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा, अन्नहा णं पास परिहरेज्जा। एस मग्गे आरिएहिं पवेइए, जहे'त्थ कुसले नोवलिप्पेज्जासि—त्ति बेमि।
(४) कामा दुरइक्कमा, जीवियं दुप्पडिवूहणं;
काम-कामी खलु अयं पुरिसे, से सोयइ जूरइ तिप्पइ पिट्टइ परितप्पइ।
आयय-चक्खू लोग-विपस्सी 10
लोगस्स अहे-भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ गढिए अणुपरियट्टमाणे;
संधिं विइत्ता इह मच्चिएहिं
' एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए '।
(५) जहा अन्तो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अन्तो। अन्तो-अन्तो पूइ-देह-15 न्तराणि पासइ पुढो विसवन्ताइं पण्डिए पडिलेहाए,
से मइमं परिन्नाए।
मा य हु लालं पच्चासी,
मा तेसु तिरिच्छं अप्पाणं आवायए। कासंकसे'यं खलु पुरिसे, बहु-माई, कडेण मूढे पुणो तं करेइ लोभं; 20
वेरं वड्ढेहि अप्पणो।
जमिणं परिकहिज्जइ, इमस्स चेव पडिवूहणयाए
अमरायइ महा-सड्ढी,
अट्टमेयं तु पेहाए अपरिन्नाएँ कन्दइ;
" से तं जाणह, जमहं बेमि ! " 25
(६) तेइच्छं पण्डिए पवयमाणे। से हन्ता छेत्ता भेत्ता लुम्पित्ता विलुम्पित्ता उद्दवइत्ता ' अकडं करिस्सामि ' त्ति मन्नमाणे।
जस्स वि य णं करेइ,
अलं बालस्स संगेणं,
जे वा से कारेइ, बाले। 30
न एवं अणगारस्स जायइ—त्ति बेमि॥

२–६

(१) से तं संबुज्झमाणे आयाणियं, समुट्ठाए—तम्हा पावं कम्मं
२ नेव कुज्जा न कारवे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिया तत्थे'गयरं विपरामुसइ,
छसु अन्नयरम्मि कप्पइ ।
सुहट्ठी लालप्पमाणे
सएण दुक्खेण मूढे विप्परियासु'वेइ ।
सएण वि प्पमाएणं पुढो वयं पकुव्वइ,
जंसि'मे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए " नो निकरणाए :
एस परिन्ना पवुच्चइ, कम्मोवसन्ती ।
जे ममाइय-मइं जहाइ, से जहाइ ममाइयं;
से हु दिट्ठ-भए मुणी, जस्स नत्थि ममाइयं ।
तं परिन्नाय मेहावी
विइत्ता लोगं, वन्ता लोग-सन्नं
से मइमं परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ।

(३) नारइं सहए वीरे, वीरे नो सहए रइं;
जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे न रज्जई ।
सद्दे य फासे अहियासमाणे
निव्विन्द नन्दि इह जीवियस्स ।
मुणी मोणं समायाय धुणे कम्म-सरीरगं;
पन्तं लुहं सेवन्ति वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।
एस ओहंतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए—त्ति बेमि ।

(४) दुव्वसु-मुणी अणाणाए तुच्छए गिलाइ वट्टए:
'एस वीरे पसंसिए', 'अच्चेइ लोग-संजोगं, एस नाए पवुच्चइ'; जं दुक्खं पवेइयं 'इह माणवाणं' तस्स 'दुक्खस्स कुसला परिन्नं उदाहरन्ति ': (५) ' इति कम्म परिन्नाय सव्वसो ' जे अणन्न-दंसी से अणन्नारामे, जे अणन्नारामे से अणन्न-दंसी:
जहा पुण्णस्स कत्थई, तहा तुच्छस्स कत्थइ ।
जहा तुच्छस्स कत्थई, तहा पुण्णस्स कत्थई । अवि य हणे अणाइय माणे:
एत्थम्पि जाण: सेयं ति नत्थि
" के'यं पुरिसे कं च नए ? ! " ' एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए !'
उड्ढं अहं तिरियं दिसासु;
से सव्वओ सव्व-परिन्न-चारी
न लिप्पई छण-पएण वीरे ।
से मेहावी, जे अणुग्घायणस्स खेयन्ने, जे य बन्ध-पमोक्खमन्नेसी:
कुसले पुण नो बद्धे
नो मुक्के से ज्जं च आरभे जं चं नारभे !
(५) अणारद्धं च नारभे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छणं-छणं परिन्नाय लोग-सन्नं च सव्वसो ।
उद्देसो पासगस्स...(यथा ७,३०.) ... आवट्टं अणुपरियट्टइ—त्ति बेमि ॥

सी ओ स णि ज्जं

३—१

(१) सुत्ता अमुणी, मुणिणो सययं जागरन्ति;
लोगंसि जाण अहियाय दुक्खं ।
समयं लोगस्स जाणित्ता

एत्थ सत्थोवरए । जस्सि'मे सद्दा य रूवा य गन्धा य रसा य फासा य अभिसमन्नागया भवन्ति, (२) से आयवं नाणवं वेयवं धम्मवं बम्भवं, पन्नाणेहिं परिजाणइ लोगं ।

मुणी ति वच्चे, धम्मविउ त्ति अञ्जू,
आवट्ट-सोए संगमिणं'भिजाणइ ।
सीओसिण-च्चाई से निग्गन्थे अरइ-रइ-सहे फरुसियं नो वेएइ ।
जागर-वेरोवरए वीरे एवं दुक्खा पमोक्खसि ।

(३) जरा-मच्चु-वसोवणीए नरे,
सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ ।
पासिय आउरे पाणे अपमत्तो परिव्वए ।
मन्ता एयं अहियं ति पास
आरम्भजं दुक्खमिणं ति नच्चा
माई पमाई पुनरेइ गब्भं ।
उवेहमाणो सद्द-रूवेसु उज्जू
माराभिसंकि मरणा पमुच्चइ ।

अप्पमत्तो कामेहिं, उवरओ पाव-कम्मेहिं, वीरे आय-गुत्ते, जे खेयन्ने । (४) जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ने; से असत्थस्स खेयन्ने; जे असत्थस्स खेयन्ने, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ने ।

अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ
कम्मुणा उवाही जायइ ।
कम्मं च पडिलेहाए कम्म-मूलं च जं छणं पडिलेहिय, सव्वं समायाय
दोहिं अन्तेहिं अदिस्समाणे
तं परिन्नाय मेहावी
विइत्ता लोगं, वन्ता लोग-सन्नं
से मइमं परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३–२

१. जाइं च वुड्ढिं च इह'ज्ज पास,
भूएहिं सायं पडिलेह जाणे;
तम्हा'इविज्जो ' परमं ' ति नच्चा
सम्मत्त-दंसी न करेइ पावं ॥

२. उम्मुञ्च पासं इह मच्चिएहिं;
आरम्भ-जीवी उभयाणुपस्सी
कामेसु गिद्धा निचयं करेन्ति,
संसिच्चमाणा पुनरेन्ति गब्भं ॥

३. अवि से हासमासज्ज ' हन्ता नन्दी ' ति मन्नइ।
अलं बालस्स संगेण, वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥

४. तम्हा'इविज्जं ' परमं ' ति नच्चा
आयंक-दंसी न करेइ पावं;
अग्गं च मूलं च विगिञ्च धीरे
पलिच्छिन्दियाणं निक्कम्म-दंसी ॥

(१) एस मरणा पमुच्चइ, से हु दिट्ठ-भए मुणी;
लोगंसि परम-दंसी
विवित्त-जीवी उवसन्ते समिए सहिए सया जए
कालकंखी परिव्वए।
बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं।
सच्चम्मि धिइं कुव्वहा।

एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं झोसेइ। (२) अणेग-चित्ते खलु अयं पुरिसे : से केयणं अरिहइ पूरइत्तए, से अन्न-वहाए अन्न-परियावाए अन्न-परिग्गहाए, जणवय-वहाए जणवय-परियावाए जणवय-परिग्गहाए।

(३) आसेवित्ता एयमट्ठं इच्चेवे'गे समुट्ठिया;
तम्हा तं बिइयं नो सेवए निस्सारं पासिय नाणी।
उववायं चवणं नच्चा अणन्नं चर माहणे।
से न छणे न छणावए छणन्तं नाणुजाणए।
निव्विन्द नान्दिं अरए पयासु
अणोमदंसी
निसण्णो पावेहिं कम्मेहिं।

५ कोहाइमाणं हणिया य वीरे,
लोभस्स पासे निरयं महन्तं;
तम्हा हि वीरे विरओ वहाओ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छिन्देज्ज सोयं लहुभूय-गामी ।
६. गन्थं परिन्नाय इह'ज्ज वीरे
सोयं परिन्नाय चरेज्ज दन्ते;
उम्मुग्गॅ लद्धुं इह माणवेहिं
नो पाणिणं पाणे समारभेज्जासि—त्ति बेमि ॥

३—३

(१) संधिं लोगस्स जाणित्ता
आयओ बहिया पास, तम्हा न हन्ता न वि घायए ।
जमिणं अन्नमन्न-विइगिच्छाए
पडिलेहाए न करेइ पावं कम्मं,
किं तत्थ, मुणी, कारणं सिया ?
१. समयं तत्थु'वेहाए अप्पाणं विप्पसायए;
अणन्न-परम-न्नाणी नो पमाए कयाइ वि ॥
आय-गुत्ते सया धीरे जाया-मायाएँ जावए,
(२) विरागं रूवेसु गच्छेज्जा महया खुड्डएहि वा ।
आगइं गइं परिन्नाय
दोहिं वि अन्तेहिं अदिस्समाणे
से न छिज्जइ न भिज्जइ न डज्झइ,
न हम्मइ (३) कंचणं सव्व लोए ।
अवरेण पुव्वं न सरन्ति एगे
किमस्स'ईयं किं वा'गमिस्सं;
भासन्ति एगे इह माणवा उ:
जमस्स'ईयं तमा'गमिस्सं ।
नाईयमट्ठं न य आगमिस्सं
अट्ठं नियच्छन्ति तहागया उ;
विधूय कप्पे एयाणुपस्सि
निज्झोसइत्ता खवए महेसी ।
२. का अरइ के या'णन्दे ? एत्थं पि अग्गहे चरे;
सव्वं हासं परिच्चज्ज अल्लीण-गुत्तो परिव्वए ।
(४) पुरिसा ! तुममेव तुमं-मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसी ?

जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं; जं जाणेज्जा दूरालइयं; तं जाणेज्जा उच्चालइयं ।

पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिनिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि ! सच्चस्स आणाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ। सहिए धम्ममायाय सेयं समणुपस्सइ।

दुहओ : जीवियस्स परिवन्दण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमायन्ति; सहिए दुक्खमत्ताए पुट्ठो; नो झञ्झाए।

पासिमं दविए लोए लोगालोग-पवञ्चाओ पमुच्चइ—त्तिबेमि ॥

३--४

(१) से वन्ता कोहं च माणं च मायं च लोभं च एयं पासगस्स दंसणं, उवरय-सत्थस्स पलियन्त-करस्स आयाणं सगडब्भि। जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ; जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ। सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वओ अप्पमत्तस्स नत्थि भयं। २ जे 'एगं' नामे, से 'बहुं' नामे; जे 'बहुं' नामे, से 'एगं' नामे।

दुक्खं लोगस्स जाणित्ता वन्ता लोगस्स संजोगं
जन्ति वीरा महा-जाणं, परेण परं जन्ति, नावकंखन्ति जीवियं।

(३) एगं विगिञ्चमाणे पुढो विगिञ्चइ, पुढो विगिञ्चमाणे एगं विगिञ्चइ।
सड्ढी आणाएँ मेहावी,
लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुओभयं।
अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण परं :

(४) जे कोह-दंसी से माण-दंसी, जे माण-दंसी से माय-दंसी, ...लोभ-दं० .... पेज्ज-दं० .... दोस-दं० .... मोह-दं० ....गब्भ दं०....जम्म-दं० .... मार-दं० .... नरय-दं० तिरिय-दं० .... दुक्ख-दंसी। से मेहावी अभिनिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च। एयं .... (यथा ६.) .... आयाणं निसिद्धा सगडब्भि। किमत्थि उवाही पासगस्स ? न विज्जइ, नत्थि—त्ति बेमि ॥

स म्म त्तं

४--१

(१) से बेमिः जे य अईया जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहन्ता भगवन्तो, सव्वे ते एवमाइक्खन्ति एवं भासन्ति एवं पन्नवेन्ति एवं परूवेन्तिः—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हन्तव्वा न अज्जावेयव्वा न परिघेत्तव्वा न परियावेयव्वा न उद्दवेयव्वा। (२) एस धम्मे सुद्धे निइए सासए समेच्च लोगं खेयन्नेहिं पवेइए, तं-जहा-उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा, उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा, उवरय-दण्डेसु वा अणुवरय-दण्डेसु वा, सोवहिएसु वा अणुवहिएसु वा, संजोग-रएसु वा असंजोग-रएसु वा।

तच्चं चे'यं तहा चे'यं, अस्सिं चे'यं पवुच्चइ।

(३) तं आइत्तु न निहे, न निक्खिवे, जाणित्तु धम्मं जहा-तहा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिट्ठेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, नो लोगस्से'सणं चरे ।
जस्स नत्थि इमा नाई, अन्ना तस्स कओ सिया ?
दिट्ठं सुयं मयं विन्नायं, जं एवं परिकहिज्जइ । समेमाणा चलेमाणा ' पुणो-पुणो जाइं पकप्पेन्ति ' ; ' अहो य राओ जयमाणे धीरे,' सया आगय-पन्नाणे ।
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ॥ 5

४–२

(१) जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा । जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा । एए पए संबुज्झमाणे लोगं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेइयं
आघाइ नाणी इह माणवाणं
संसार पडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विन्नाण-पत्ताणं:
(२) अट्टा वि सन्ता अदु वा पमत्ता ! 10
अहा-सच्चमिणं ति बेमि:
ना'णागमो मच्चु-मुहस्स अत्थि;
इच्छा-पणीया वंकानिकेया
काल-ग्गहीया निचए निविट्ठा
पुढो-पुढो जाइं पकप्पयन्ति । 15
(३) एगे वयन्ति अदु वा वि नाणी
नाणी वयन्ति अदु वा वि एगे:
आवन्ती केया'वन्ती लोगंसि समणा य माहणा य पुढो विवायं वयन्ति:—" से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विन्नायं च णे,
उड्ढं अहे यॉ तिरियं दिसासु 20
सव्वओ सुपडिलेहियं च णे: सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हन्तव्वा अज्जावेयव्वा परिघेत्तव्वा उद्दवेयव्वा;
एत्थं पि जाणह: नत्थेत्थ दोसो " ।
(४) अणारिय-वयणमेयं । तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी:—" से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुम्मयं भे, दुव्विन्नायं च भे, ' उड्ढं .... दुप्पडिलेहियं च भे, 25
जं णं तुब्भे एवमाइक्खह एवं भासह एवं पन्नवेह एवं परूवेह: सव्वे....दोसो' । अणारियवयणमयं । (५) वयं पुण एवमाइक्खामो एवं भासामो एवं पन्नवेमो एवं परूवेमो: सव्वे पाणा ४ न हन्तव्वा न अज्जावेयव्वा न परियावेयव्वा न परिघेत्तव्वा न उद्दवेयव्वा; ' एत्थं पि जाणह: नत्थेत्थ दोसो । ' आरिय-वयणमेयं " । पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं-पत्तेयं पुच्छिस्सामो:—" हं भो पावाउया ! किं भे सायं दुक्खं उयाहु असायं ? " समिया-पडिवन्ने यावि 30
एवं बूया:—" सव्वेसिं पाणाणं ४ असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं " ति—त्ति बेमि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४-३

(१) उवेह एणं बहिया य लोगं !
से सव्व-लोगंसि जे केइ विन्नू ;
अणुवीइ पास निक्खित्त-दण्डा
जे केइ सत्ता पलियं चयन्ति ।
नरा मुय'च्चा धम्मविउ त्ति अञ्जू
' आरम्भजं दुक्खमिणं ' ति नच्चा
एवमाहु सम्मत्तदंसिणो (२) ते सव्वे पावाइया;
दुक्खस्स कुसला परिन्नमुदाहरन्ति:
' इति कम्म परिन्नाय सव्वसो ' । इह आणा-कंखी पण्डिए अनिहे
एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरीरगं,
कसेहि अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं
जहा जुण्णाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थइ ।
एवमत्त-समाहिए अनिहे
विगिञ्च कोहं अविकम्पमाणे
इमं निरुद्धा'उयं संपेहाए,
दुक्खं च जाण अदु वा'गमिस्सं;
पुढो फासाइं च फासए:
लोगं च पास विप्फन्दमाणं,
(३) जे निव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अनियाणा ते वियाहिया ।
तम्हा'इविज्जो नो पडिसंजलेज्जासि—त्ति बेमि ॥

४-४

(१) आवीलए पवीलए निप्पीलए
जहित्ता पुव्व-संजोगं
हिच्चा उवसमं;
तम्हा अविमणे वीरे
सारए समिए सहिए सया जए—दुरणुचरो मग्गो वीराणं अनियट्ट-गामीणं—
विगिञ्च मंस-सोणियं ।
(२) एस पुरिसे दविए वीरे आयाणिज्जे वियाहिए,
जे धुणाइ समुस्सयं
वसित्ता बम्भचेरंसि ।
नेत्तेहिं पलिच्छन्नेहिं
आयाण-सोय-गढिए बाले अव्वोच्छिन्न-बन्धणे अणभिक्कन्त-संजोए,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तमंसि अविजाणओ
आणाए लम्भो नत्थि त्ति बेमि,
(३) जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्झे तस्स कुओ सिया ?
से हु पन्नाणमन्ते बुद्धे आरम्भोवरए;
सम्ममेयं ति पासहा । 5
जेण बन्धं वहं घोरं परियावं च दारुणं
पलिच्छिन्दिय बाहिरगं च सोयं
निक्कम्म-दंसी इह मच्चिएहिं,
कम्मुणा स-फलं दट्ठुं तओ निज्जाइ वेयवी ।
(४) जे खलु भो वीरा समिया सहिया सया जया संघड-दंसिणो आओवरया 10
अहा-तहं लोगं उवेहमाणा,
पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं इति, सच्चंसि परिविचिट्ठिंसु, साहिस्सामो नाणं वीराणं समियाणं सहियाणं सया जयाणं संघड-दंसीणं आओवरयाणं अहा-तहा लोगं समुप्पेहमाणाणं । किमत्थि उवाही पासगस्स ? न विज्जइ, नत्थि—त्ति बेमि ॥

लो ग सा रो

(आवन्ती)

५–१

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगंसि विप्परामुसन्ती अट्ठाए अणट्ठाए वा एएसु चेव 15
विप्परामुसन्ती । गुरू से कामा, तओ से मारस्स अन्तो; जओ से मारस्स अन्तो, तओ से दूरे । नेव से अन्तो, नेव से दूरे । से पासइ फुसियमिव कुसग्गे पणुन्नं निवइयं वाएरियं
एवं बालस्स जीवियं मन्दस्स अविजाणओ ।
कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमेइ, 20
मोहेण गब्भं मरणाइ एइ,
' एत्थ मोहे पुणो-पुणो' । संसयं परिजाणओ संसारे परिन्नाए भवइ; संसयं अपरिजाणओ संसारे अपरिन्नाए भवइ ।
जे छेए, सागारियं न सेवए,
कट्टु एवमवयाणओ बिइया मन्दस्स बालिया लद्धा हुरत्था । 25
पडिलेहाए आयमेत्ता अणासेवणाए—त्ति बेमि ।
(२) पासह एगे
रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे,
' एत्थ फासे पुणो-पुणो ' ।
आवन्ती केया'वन्ती लोगंसि आरम्भजीवी, एएसु चेव आरम्भजीवी । 30

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एत्थ वि बाले परिपच्चमाणे
रमइ पावेहिं कम्मेहिं
असरणं ' सरणं ' ति मन्नमाणे ।
इहमेगेसिं एग-चरिया भवइ । (३) से बहु-कोहे बहु-माणे बहु-माए बहु-लोभे, बहु-रए बहु-नडे बहु-सढे बहु-संकप्पे आसव-सक्की पलिओच्छन्ने; उट्ठिय-वायं पवयमाणे—' मा मे केइ अदक्खू ' । अन्नाण-पमाय-दोसेणं सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ ।
अट्टा पया, माणव, कम्म-कोविया,
जे अणुवरया अविज्जाए पलिमोक्खमाहु; आवट्टमेव अणुपरियट्टन्ति—त्ति बेमि ॥

५–२

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगंसि अणारम्भ-जीवी, एएसु चेव अणारम्भजीवी ।
एत्थोवरए तं झोसमाणे
' अयं संधी ' ति अदक्खू, जे ' इमस्स विग्गहस्स अयं खणे '
त्ति अन्नेसी ।
एस मग्गे आरिएहिं पवेइए ।
(२) उट्ठिए नो पमायए ।
' जाणित्तु दुक्खं पत्तेय-सायं ' ;
पुढो-छन्दा इह माणवा—पुढो दुक्खं पवेइयं ।
से अविहिंसमाणे अनवयमाणे
पुढो फासे विपणोल्लए, एस समिया-परियाए वियाहिए ।
(३) जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं उयाहु : " ते आयंका फुसन्ति " इति, उयाहु वीरे : ' ते फासे पुट्ठे'हियासए' । से पुव्वं पेयं पच्छा वेयं भेउर-धम्मं विद्धंसण-धम्मं अधुवं अनितियं असासयं चयावचइयं विपरिणाम-धम्मं पासह । एवंरूव-संधिं समुवेहमाणस्स एगायय-रयस्स इह विप्पमुक्कस्स नत्थि मग्गे विरयस्स—त्ति बेमि ।
(४) आवन्ती केया'वन्ती लोगंसि परिग्गहावन्ती : से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमन्तं वा अचित्तं वा, एएसु चेव परिग्गहावन्ती, एयदेवेगेसिं महब्भयं भवइ ।
लोग-वित्तं च णं उवेहाए, एए संगे अविजाणओ,
' से सुप्पडिबुद्धं सूवणीयं ' ति नच्चा
पुरिसा ! परम-चक्खू विप्परक्कम एएसु चेव बम्भचेरं ! ति बेमि;
(५) " से सुयं च मे अज्झत्थं च मे " :
बन्ध-प्पमोक्खो तुज्झ'ज्झत्थेव ।
एत्थ विरए अणगारे दीह-रायं तिइक्खए;
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते परिव्वए ।
एयं मोणं सम्मं अणुवासेज्जासि—त्ति बेमि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५—३

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगंसि अपरिग्गहावन्ती, एएसु चेव अपरिग्गहावन्ती ।
सोच्चा वइं मेहावी पण्डियाण निसामिया
—समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए—"जहेत्थ मए संधी झोसिए, एवं अन्नत्थ; संधी दुज्झोसए भवइ । तम्हा बेमि" :
नो निण्हवेज्ज वीरियं । 5

(२) जे पुव्वुट्ठायी नो पच्छा-निवाई, जे पुव्वुट्ठाई पच्छा-निवाई, जे नो पुव्वुट्ठाई नो पच्छा-निवाई
से वि तारिसए सिया, जे परिन्नाय लोगमन्नेसिए ।
एयं नियाय मुणिणा पवेइयं,
इह आणा-कंखी पण्डिए अनिहे पुव्वावर-रायं जयमाणे 10
सया सीलं संपेहाए सुणिया भवे अकामे अझञ्झे ।
इमेण चेव जुज्झाहि ! किं ते जुज्झेण बज्झओ ?
जुद्धारिहं खलु दुल्लभं ।
जहेत्थ कुसलेहिं परिन्ना-विवेगे भासिए ।
चुए हु बाले गब्भाइ रिज्जइ;
(३) ' अस्सिं चेयं पवुच्चई ' । रूवंसि वा छणंसि वा ' से हु एगे संविद्धभए मुणी ' 15
अन्नहा लोगमुवेहमाणे
' इति कम्मं परिन्नाय सव्वसो से न हिंसइ',
संजमई, नो पगब्भई ।
(४) उवेहमाणो पत्तेय-सायं वण्णाएसी 20
नारभे कंचणं सव्व-लोए,
एग-प्पमुहे विदिस-प्पइण्णे
निव्विण्ण-चारी अरए पयासु ।
से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मन्तं नो अन्नेसी । जं सम्मं ति पासहा, तं मोणं ति पासहा; जं मोणं ति पासहा तं सम्मं ति पासहा । न 25
इमं सक्कं सिढिलेहिं आइज्जमाणेहिं गुणासाएहिं वंक-समायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसन्तेहिं ।
(५) मुणी मोणं समायाए धुणे कम्म-सरीरगं;
पन्तं लूहं च सेवन्ती वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।
एस ओहंतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए—त्ति बेमि ॥

५—४

(१) गामाणु-गामं दूइज्जमाणस्स 30
दुज्जायं दुप्पक्कन्तं भवइ अवियत्तस्स भिक्खुणो:
वयसा वि एगे बुइया कुप्पन्ति माणवा,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उन्नयमाणे य नरे महया मोहेण मुज्झइ—
(२) संबाहा बहवे भुज्जो दुरइक्कमा अजाणओ अपासओ ।
एयं ते मा होउ ! एयं कुसलस्स दंसणं,
तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तस्सन्नी तन्निवेसणे
जयं-विहारी चित्त-निवाई
पन्थ-निज्झाई बलि-बाहिरे
पासिय पाणे गच्छेज्जा ।
(३) से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे, संकुचेमाणे पसारेमाणे
विनियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे ।
एगया गुण-समियस्स रीयओ काय-संफासं अणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दायन्ति; इह लोग-वेयण-वेज्जावडियं ।
जं आउट्टी-कयं कम्मं, तं परिन्नाय विवेगमेइ;
एवं से अप्पमाएणं विवेगं किट्टइ वेयवी ।
(४) से पहूय-दंसी पहूय-परिन्नाणे उवसन्ते सहिए सया जए दुट्ठं
विप्पडिवेएइ अप्पाणं : ' किमेस जणो करिस्सइ ?
एस से परमारामे, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ' ।
मुणिणा हु एयं पवेइयं : (५) उब्बाहिज्जमाणे गाम-धम्मेहिं अविनिब्बलासए, अवि ओमोयरियं कुज्जा, अवि उड्ढं ठाणं ठाएज्जा, अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, अवि आहारं वोच्छिन्देज्जा, अवि चए इत्थीसु मणं : पुव्वं दण्डा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दण्डा—इच्चेए कलहा संगकरा भवन्ति । पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि ।
से नो काहिए नो पासणिए नो संपसारए नो मामए नो कय-किरिए; ' वइ-गुत्ते अज्झप्प-संवुडे ' परिव्वज्जए सया पावं । एयं मोणं समणुवासेज्जासि—त्ति बेमि ।

५–५

(१) से बेमि तं-जहा :
अवि हरए पडिपुण्णे समंसि भोमे चिट्ठइ,
उवसन्त-रए सारक्खमाणे से चिट्ठइ सोयमज्झ-गए ।
से पास सव्वओ गुत्ते पास लोए महेसिणो,
जे य पन्नाणमन्ता पबुद्धा आरम्भोवरया;
समम्मेयं ति पासहा ।
' कालस्स कंखाए परिव्वयन्ति'— त्ति बेमि ।
(२) विगिञ्छ-समावन्नेणं अप्पाणेणं नो लभइ समाहिं । ' सिया वे'गे अणुगच्छन्ति ?, असिया वे'गे अणुगच्छन्ति ? ' अणुगच्छमाणेहिं अणुगच्छमाणे कहं न निव्विज्जे ?
(३) तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।
सट्ठिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स ' समियं ' ति मन्नमाणस्स एगया समिया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होइ, [१] ' स० ' ति म० ए० ' असमिया ' हो०, [२] ' असमियं ' ति० म० ए० समिया हो०, [३] ' अ० ' ति म० ए० असमिया होइ। [४] ' समियं ' ति म० ' समिया वा असमिया वा ', समिया होइ उवेहाए, [५] 'असमियं' ति म० 'स०वा अ० वा ' असमिया होइ उवेहाए। उवेहमाणं अणुवेहमाणं बूया : " उवेहाहि समियाए" । इच्चेवं तत्थ संधी झोसिए भवइ ।

(४) से उट्ठियस्स ठियस्स गइं समणुपस्सह, 5

एत्थ वि बाल-भावे अप्पाणं नो उवदंसेज्जा ।

तुमं सि नाम तं चेव जं ' हन्तव्वं ' ति मन्नसि !

तुमं सि नाम तं चेव जं 'अज्जावेयव्वं ' ति मन्नसि, . . . 'परियावेयव्वं ' . . . ' परिघेत्तव्वं ' . . . ' उद्दवेयव्वं' . . . ' अज्जू चेयंपडिबुद्ध-जीवी । '

तम्हा न हन्ता न वि घायए । 10

(५) अणुसंवेयणं अप्पाणेणं ' जं हन्तव्वं ' ति नाभिपत्थए ।

जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया : जेण विजाणइ से आया । तं पडुच्च पडिसंखाए एस आया-वाई ।

समियाए परियाए वियाहिए—त्ति बेमि ॥

५–६

(१) अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा एयं ते मा होउ ! 15 एयं कुसलस्स दंसणं, ' तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए, तप्पुरक्कारे तस्सन्नी तन्निवेसणे । '

अभिभूय अदक्खू अणभिभूए; पहू निरालम्बणयाए जे महं अबही-मणे ।

पवाएणं पवायं जाणेज्जा सह-सम्मुइयाए पर-वायरणेणं अन्नोसिं वा अन्तिए सोच्चा,

(५) निद्देसं नाइवत्तेज्जा मेहावी ।

सुपडिलेहिय सव्वओ सव्वयाए सम्ममेव समभिजाणिया । 20

इहारामं परिन्नाय अल्लीण-गुत्तो परिव्वए;

निट्ठियट्ठी वीरे आगमेणं सया परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ।

(२) उड्ढं सोया अहे सोया तिरियं सोया वियाहिया;

एए सोया वियक्खाया जेहिं संगं ति पासहा ।

आवट्टं तु उवेहाए एत्थ विरमेज्ज वेयवी, 25

विणइत्तु सोयं निक्खम्म

एस महमकम्मा जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकंखइ; (३) इह आगइं गइं परिन्नाय अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमगं विक्खाय-रए;

सव्वे सरा नियट्टन्ति ।

तक्का जत्थ न विज्जइ, मई तत्थ न गाहिया । 30

ओए अप्पइट्ठाणस्स खेयन्ने : (४) से न दीहे न हस्से न वट्टे न तंसे न चउरंसे न परिमण्डले, न किण्हे न नीले न लोहिए न हालिद्दे न सुक्किले, न सुरभिगंधे न दुरभिगंधे, न तित्ते न कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे, न कक्खडे न मउए, न गुरुए न लहुए, न सीए न उण्हे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न निद्धे न लुक्खे, न काऊ, न रुहे न संगे, न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा । ' परिन्ने सन्ने उवमा न विज्जइ ' । अरूवी सत्ता, अपयस्स पयं नत्थि । से न सद्दे न रूवे न गन्धे न रसे न फासे इच्चेयावन्ति—त्ति बेमि ॥

धु यं

६–१

(१) ओबुज्झमाणे इह माणवेसु
आघाइ से
नरे जस्सि'माओ जाईओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवन्ति, अग्घाइ से धुयं णाणमणेलिसं ।
से किट्टइ तेसि समुट्ठियाणं निक्खित्त-दण्डाणं
समाहियाणं पन्नाणमन्ताणं इह मुत्ति-मग्गं ।
एवं पेगे महावीरा विपरक्कमन्ति,
पासह एगे अवसीयमाणे अणत्त-पन्ने ।
(२) से बेमि : से जहा वि कुम्मे हरए विनिविट्ठ-चित्ते
पच्छन्न-पलासे उम्मुग्गं से नो लभइ ।
भज्जगा इव सन्निवेसं नो चयन्ति,
एवं पेगे अणेग-रूवेहिं कुलेहिं जाया
रूवेहिं सत्ता कलुणं थणन्ति,
नियाणओ ते न लभन्ति मोक्खं ।
अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताए जाया
१. गण्डी अदु वा कोट्ठी रायंसी, अवमारियं
काणियं झिम्मियं चेव कुणियं खुज्जियं तहा,
२. उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणं
वेवयं पीढ-सप्पिं च सिलिवइं महु-मेहिणं—
३. सोलस एए रोगा अक्खाया अणुपुव्वसो ।
अह णं फुसन्ति आयंका फासा य असमञ्जसा ।
४. मरणं तेसिं सपेहाए उववायं चवणं च नच्चा
परिपागं च सपेहाए तं सुणेह जहा-तहा ।
(३) सन्ति पाणा अंधा तमंसि वियाहिया ।
तामेव सइमसइमइयच्च उच्चावए फासे पडिसंवेएइ ।
बुद्धेहेयं पवेइयं ।
(४) सन्ति पाणा वासगा रसगा उदए उदय-चरा आगास-गामिणो—
पाणा पाणे किलेसन्ति : पास लोए महब्भयं ।
बहु-दुक्खा हु जन्तवो : सत्ता कामेहिं माणवा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवलेण वहं गच्छन्ति सरीरेण पभंगुरेण;
अट्टे से बहु-दुक्खे इती बाले पकुव्वइ;
एए रोगे बहू नच्चा आउरा परियावए।
" नालं पास "—अलं तवे'एहिं !
एयं पास, मुणी, महब्भयं, नाइवाएज्ज कंचणं। 5
आयाण भो सुस्सूस भो !
धूय-वायं पवेएस्सामि।

(५) इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूया अभिसंजायां अभिनिव्वट्टा अभिसंवुडा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खन्ता अणुपुव्वेण महामुणी। तं
परक्कमन्तं परिदेवमाणा 10
" मा णे चयाहि " इति ते वयन्ति;
(६) छन्दोवणीया अज्झोववन्ना
अक्कन्द-कारी जणगा रुयन्ति।

अतारिसे मुणी ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा; सरणं तत्थ नो समेइ। किह नाम से तत्थ रमइ? एयं नाणं सया समणुवासेज्जासि त्ति—बेमि ॥ 15

६–२

(१) आउरं लोग मायाए
चइत्ता पुव्व-संजोगं
हिच्चा उवसमं
वसित्ता बम्भचेरंसि
वसु वा अणुवसु वा 20
जाणित्तु धम्मं जहा-तहा
अहे'गे तमच्चाई

कुसीला वत्थं पडिग्गहं कम्बलं पाय-पुञ्छणं विओसिज्जा अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए। कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्ते वा अपरि-माणाए भेओ एवं से अन्तराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं; अविइण्णा चे'ए। 25

(२) अहे'गे धम्ममायाए—
आयाण-पभिइ-सुप्पणिहिए चरे अपलीयमाणे दढे;
सव्वं गेहिं परिन्नाय एस पणए महा-मुणी,
अइयच्च सव्वओ संगं
' न महं अत्थी ' ति। इति ' एगो अहमंसि ' जयमाणे 30
एत्थ विरए अणगारे सव्वओ मुण्डे रीयए।
जे अचेले परिवुसिए संचिक्खइ ओमोयरियाए, से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा
पलिय-प्पगन्थे अदु वा पगन्थे अतहेहिं
सद्द-फासेहिं । इति संखाए एगयरे अन्नयरे
अभिन्नाय तिइक्खमाणे परिव्वए ।
जे य हिरी । जे उ अहिरीमाणे
चेच्चा सव्वं विसोत्तियं संफासे फासे समिय-दंसणे ।
(३) एए भो नगिणा वुत्ता, जे लोगंसि अणागमण-धम्मिणो
आणाए मामगं धम्मं, एस उत्तर-वाए इह माणवाणं वियाहिए ।
एत्थोवरए तं झोसमाणे
आयाणिज्जं परिन्नाय परियाएणं विगिञ्चइ ।
इहमेगेसिं एग-चरिया होइ । तत्थि'यरा-इयरेहिं कुलेहिं सुद्धे'सणाए सव्वे'सणाए
से मेहावी परिव्वए;
सुब्भि वा अदु वा दुब्भि अदु वा तत्थ भेरवाः
' पाणा पाणे किलेसन्ति ' । ते फासे ' पुट्ठो वीरे'हियासएज्जासि'—त्ति बेमि ॥

६—३

(१) एयं खु, मुणी, आयाणं ।
' सया सुअक्खाय-धम्मे, ' ' विधूय-कप्पे निज्झोसइत्ता ' । जे अचेले परिवुसिए, तस्स णं भिक्खुस्स नो एवं भवइः ' परिजुण्णे मे वत्थे; वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि, संधिस्सामि, सिव्विस्सामि, उक्कसिस्सामि, वुक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि, पाउणिस्सामि ' । (२) अदु वा तत्थ परक्कमन्तं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसन्ति, सीय-फा० फु०, तेओ-फा० फु०, दंसमसग-फा० फु०—एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेइ अचेले लाघवमागममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ जहे 'यं भगवया पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वओ सव्वयाए समत्तमेव समभिजाणिया ।
एवं तेसिं महा-वीराणं चिर-रायं पुव्वाइं वासाइं रीय-माणाणं दवियाणं
पास'हियासियं;
आगय-पन्नाणाणं किसा बाहा भवन्ति पयणुए य मंस-सोणिए ।
विस्सेणी-कट्टु परिन्नाय एस तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए—त्ति बेमि ।
(३) विरयं भिक्खुं रीयन्तं चिर-राओसियं अरई तत्थ किं विधारए ?
संधेमाणे समुट्ठिए;
जहा से दीवे असंदीणे एवं से धम्मे आरिय-देसिए ।
ते अणवकंखमाणा अणइवाएमाणा दइया मेहाविणो पण्डिया । एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे । जहा से दिया-पोए, एवं ते
सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइय—त्ति बेमि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६-४

(१) एवं ते ' सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइया ' तेहिं महावीरेहिं पन्नाणमन्तेहिं, तेस'न्तिए पन्नाणं उवलब्भ हिच्चा उवसमं फारुसियं समाइयन्ति, ' वसित्ता बम्भचेरंसि ' आणं ' तं नो ' त्ति मन्नमाणा आघायं तु सोच्चा निसम्म ' समणुन्ना जीविस्सामो ' एगे निक्खम्म ते

असंभवन्ता विडज्झमाणा
कामेहिं गिद्धा अज्झोववन्ना
समाहिमाघायमझोसयन्ता
सत्थारमेव फरुसं वयन्ति ।
सीलमन्ता उवसन्ता संखाएँ रीयमाणा
' असीला ' अणुवयमाणस्स बिइया मन्दस्स बालिया ।

नियट्टमाणा वे'गे आयार-गोयरमाइक्खन्तिः
नाण-ब्भट्ठा दंसण-लूसिणो नममाणा एगे जीवियं विप्परिणामेन्ति;
पुट्ठा वे'गे नियट्टन्ति जीवियस्सेव कारणा ।

निक्खन्तं पि तेसिं दुण्णिक्खन्तं भवइ । (२) ' बाला-'वयणिज्जा हु ते नरा; ' पुणो-पुणो जाइं पगप्पेन्ति ' ।

अहेँ संभवन्ता विद्दायमाणा
" अहमंसीति " विउक्कसे, उदासीणे ' फरुसं वयन्ति ' ' पलियप्पगन्थे अदु वा पगन्थे अतहेहिं तं मेहावी जाणेज्जा धम्मं। अहमट्ठी " तुमं सि नाम बाले ", आरम्भट्ठी अणुवयमाणेः " हण पाणे ! " घायमीणे हणओ यावि समणुजाणमीणेः
" घोरे धम्मे उदीरिए ! "

उवेहइ णं अणाणाए, एस विसण्णे वितण्डे वियाहिए—त्ति बेमि ।

(३) ' किमणेण भो जणेण करिस्सामि ? '
त्ति मन्नमाणा एवं पे'गे विइत्ता ।
मायरं पियरं हेच्चा नायओ य परिग्गहं
वीरायमाणे समुट्ठाए
अविहिंसे सुव्वए दन्ते पास दीणे उप्पइए पडिवयमाणे ।
वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवन्ति ।

अहमेगेसिं सिलोए पावए भवइः " से समण-विब्भन्ते, से समण-विब्भन्ते ! " पासहे'गे समन्नागएहिं असमन्नागए, नममाणेहिं अनममाणे, विरएहिं अविरए, दविएहिं अदविए । अभिसमेच्चा पण्डिए मेहावी
निट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ॥

६-५

(१) से गिहेसु वा गिहन्तरेसु वा गामेसु वा गामन्तरेसु वा नगरेसु वा नगरन्तरेसु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा जणवएसु वा जणवयन्तरेसु वा सन्ते'गइया 'जणा लूसगा भवन्ति,' अदु वा फासा फुसन्ति ते फासे 'पुट्ठो वीरो'हियासए'।

(२) ओए समिय-दंसणे
दयं लोगस्स जाणित्ता
पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं
आइक्खे विभए किट्टे वेयवी;

से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा सुस्सुसमाणेसु पवेयए (३) सन्ति विरइं उवसमं निव्वाणं सोयं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणइ-वत्तियं; सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ भिक्खु-धम्ममाइक्खेज्जा। (४) अणुवीइ भिक्खु-धम्ममा इक्खमाणे नो अत्ताणं आसाएज्जा नो परं आसाएज्जा, नो अन्नाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा : से अणासायए अणासायमीणे।

वज्झमाणाणं पाणाणं
भूयाणं जीवाणं सत्ताणं 'जहा से दीवे असंदीणे' एवं
से भवइ सरणं महा-मुणी।

(५) एवं से उट्ठिए ठियप्पा
अनिहे अचले चले अबहि-लेसे परिव्वए।
संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे।
तम्हा संगं ति पासहा।
गन्थेहिं गढिया नरा, विसण्णा काम-विप्पिया।

तम्हा लूहाओ नो परिवित्तसेज्जा, जस्सि'मे आरम्भा सव्वओ सव्वयाए सुपरिन्नाया भवन्ति, जेसि'मे लूसिणो नो परिवित्तसन्ति। से वन्ता कोहं च माणं च मायं च लोभं च
एस तिउट्टे वियाहिए—त्ति बेमि।

(६) कायस्स विओवाए एस संगाम-सीसे वियाहिए।
से हु पारंगमे मुणी।
अविहम्ममाणे फलगावयट्ठी
कालोवणीए कंखेज्ज कालं जाव सरीर-भेओ—त्ति बेमि॥

'महापरिन्ना' नाम सप्तममध्ययनं विनष्टामिति प्राचीनः प्रवादः श्रूयते।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वि मो हो

८-१

(१) से बेमि : समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पाय-पुञ्छणं वा नो पाएज्जा नो निमन्तेज्जा, नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमीणे-त्ति बेमि ।

(२) धुवं चेयं जाणेज्जा असणं वा जाव पाय-पुञ्छणं वा लभिय नो लभिय, भुञ्जिय नो भुञ्जिय-पन्थं विवत्तूण विउक्कम्म विभत्तं धम्मं झोसेमाणे समेमाणे पाएज्जा निम-न्तेज्जा, कुज्जा वेयावडियं परं अणाढायमीणे-त्ति बेमि ।

(३) इहमेगेसिं आयार-गोयरे नो सुनिसन्ते भवइ । ते इह आरम्भट्ठी, अणुवयमाणा : " हण पाणे ! " घायमीणा हणओ यावि समणुजाणमीणा, अदु वा अदिन्नमाइयन्ति अदु वा वायाओ विउञ्जन्ति, तं-जहा:-अत्थि लोए, नत्थि लोए; धुवे लोए, अधुवे लोए; साइए लोए, अणाइए लोए; स-पज्जवसिए लोए, अपज्जवसिए लोए; ' सुकडे ' त्ति वा ' दुक्कडे ' त्ति वा, ' कल्लाणे ' त्ति वा ' पावए ' त्ति वा, ' साहु ' त्ति वा ' असाहु ' त्ति वा, ' सिद्धि ' त्ति वा ' असिद्धि ' त्ति वा, ' निरए ' त्ति वा ' अनिरए ' त्ति वा । जमिणं विप्पडिवन्ना मामगं धम्मं पन्नवेमाणा: एत्थ वि जाणेह ' अकस्मात् ' । एवं तेसिं नो सुय-क्खाए नो सुपन्नत्ते धम्मे भवइ-से जहे'यं भगवया पवेइयं आसु-पन्नेणं जाणया पासया-अदु वा गुत्ती वओ-गोयरस्स-त्ति बेमि ।

(४) सव्वत्थ सम्मयं पावं; तमेव उवाइक्कम्म एस महं विवेगे वियाहिए ।

गामे वा अदु वा रण्णे

नेव गामे नेव रण्णे

धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मईमया

जामा तिण्णि उदाहिया, जेसु इमे आरिया सम्बुज्झमाणा समुट्ठिया ।

जे निव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अनियाणा ते वियाहिया ।

उड्ढं अहं तिरियं दिसासु

सव्वओ सव्वावन्ती च णं पडिक्कं जीवेहिं कम्म-समारम्भेणं-तं परिन्नाय मेहावी नेव सयं एएहिं काएहिं दण्डं समारभेज्जा, नेव'न्नेहिं एएहिं काएहिं दण्डं समारम्भावेज्जा, ने'वन्ने एएहिं काएहिं दण्डं समारम्भन्ते वि समणुजाणेज्जा । जे व'न्ने एएहिं काएहिं दण्डं समारभन्ति, तेसिं पि वयं लज्जामो । तं परिन्नाय मेहावी तं वा दण्डं अन्नं वा दण्डं—

नो दण्ड-भी दण्डं समारभेज्जासि-त्ति बेमि ॥

८-२

(१) से भिक्खू परक्कमेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसिएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा सुसाणंसि वा सुन्नागारंसि वा गिरि-गुहंसि वा रुक्ख-मूलंसि वा कुम्भारायणंसि वा हुरत्था वा । कहींचि विह-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावई बूया:—" आउसन्तो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा ४ वत्थं वा ४ पाणाइं ४ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अनिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएमि, आवसहं वा समुस्सिणामि, से भुञ्जह वसह, (२) आउसन्तो समणा !" भिक्खू तं गाहावइं समणसं सवयसं पडियाइक्खे:—" आउसन्तो गाहावइ ! नो खलु ते वयणं आढामि, नो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा ४ वत्थं वा ४ पाणाइं ४ समारब्भ.... आहट्टु चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि । से विरओ, आउसो, गाहावइं एयस्साकरणयाए " ।

(३) से भिक्खू परक्कमेज्ज वा **जाव** हुरत्था वा .... गाहावई आयगयाए पेहाए असणं....आहट्टु चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाइ, भिक्खुं तं परिघासेउं । तं च भिक्खू जाणेज्जा सह-सम्मुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा अन्तिए सोच्चा : 'अयं खलु गाहावई मम अट्ठाए असणं....समुस्सिणाइ' । तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि ।

(४) भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा—जे इमे आहच्च गन्था फुसन्ति: "से हन्ता, हणह खणह छिन्दह दहह पयह आलुम्पह विलुम्पह सहस-क्कारेह विप्परामुसह !" ते फासे 'पुट्ठे वीरो अहियासए' ।

अदु वा आयार-गोयरं आइक्खे तक्किया णमणेलिसं,
अदु वा वइ-गुत्तीए
गोयरस्स अणुपुव्वेणं सम्मं पडिलेहाए आय-गुत्ते ।
'बुद्धेहे'यं पवेइयं. ' ।

स समणुन्ने असमणुन्नस्स असणं वा....(यथा २७, १–३.)....परं आढायमीणाए—त्ति बेमि ।

(५) ' धम्ममायाणह पवेइयं माहणेण मईमया ' । समणुन्ने समणुन्नस्स असणं वा....(यथा २७, १–३ . नवरं **नो** न भणनीयं) .... परं आढायमीणेत्ति बेमि ॥

८–३

(१) मज्झिमेणं वयसा वि एगे सम्बुज्झमाणा समुट्ठिया
सोच्चा वाई मेहावणिं पण्डियाणं निसामिया ।

समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए ते अणवकंखमाणा अणइवाएमाणा अपरिग्गहमीणा नो परिग्गहावन्ती । सव्वावन्ती च णं लोगंसि—

निहया दण्डं पाणेहिं पावं कम्मं अकुव्वमाणे एसमहं अगन्थे वियाहिए ।

(२) ओए जुइमस्स खेयन्ने उववायं चवणं च नच्चा;
आहारोवचया देहा परीसह-पभंगुरा ।

पासहे'गे सव्विन्दिएहिं परिगिलायमाणेहिं ओए; दयं दयइ जे संनिहाण-सत्थस्स खेयन्ने । से भिक्खू कालन्ने बलन्ने मायन्ने खणन्ने विणयन्ने समयन्ने ' परिग्गहं अममायमाणे ' काले'णुट्ठाई अपडिन्ने दुहओ ' छित्ता नियाइ ' ।

(३) तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाण-गावं उवसंकमित्तु गाहावई बूया:—" आउसन्तो समणा ! नो खलु ते गाम-धम्मा उब्बाहन्ति ? " " आउसन्तो गाहावई ! नो खलु मे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम-धम्मा उब्बाहन्ति, सीय-फासं च नो खलु अहं संचाएमि अहियासेत्तए। नो खलु मे कप्पइ अगणि-कायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा, कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, अन्नेसिं वा वयणाओ "। सिया से'वं वयन्तस्स परो अगणि-कायं उज्जालेत्ता कायं आयावेज्जा वा पयावेज्जा वा। तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि ॥

८–४

(१) जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिए पाय-चउत्थेहिं, तस्स णं नो एवं भवइ : 'चउत्थं वत्थं जाइस्सामि'। से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा, अहा-परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, नो धोवेज्जा नो रएज्जा, नो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउञ्चमाणे गामन्तरेसु ओमचेलिए। एयं खु वत्थ-धारिस्स सामग्गियं। अह पुण एवं जाणेज्जा : 'उवाइक्कन्ते खलु हेमन्ते, गिम्हे पडिवन्ने,' अहा-परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहा-परिजुण्णाइं वत्थाइं परिठवेत्ता अदु वा सन्तरुत्तरे अदु वा ओमचेलिए अदु वा एग-साडे अदु वा अचेले लाघवियं आगममाणे तवे से अभिसमन्नागए भवइ। जहे'यं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमेच्चा सव्वओ सव्वयाए समत्तमेव समभिजाणिया।

(२) जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ : 'पुट्ठो खलु अहमंसि, नालं अहमंसि सीय-फासं अहियासेत्तए'—से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए आउट्टे,

तवस्सिणो हु तं सेयं जं सेगे विहमाइए।
तत्थावि तस्स काल-परियाए, से वि तत्थ वियन्त-कारए।
इच्चेयं विमोहाययणं हियं सुहं खमं निस्सेसं आणुगामियं—त्ति बेमि ॥

८–५

(१) जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिए पाय-तइएहिं, तस्स णं नो एवं भवइ तइयं वत्थं जाइस्सामि'। से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा .... (यथा ६–१३, नवरं **अदु वा सन्तरुत्तरे** पाठो वर्जनीयः, तथा **वत्थधारिस्स** स्थाने **तस्स भिक्खुस्स** पाठः पठनीयः) .... एवं भवइ : 'पुट्ठो अबलो अहमंसि, नालमहमंसि गिहन्तर-संकमणं भिक्खायरियं गमणाए,' (२) से एवं वयन्तस्स परो अभिहडं असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा; से पुव्वामेव आलोएज्जा : "आउसन्तो गाहावई! नो खलु मे कप्पइ अभिहडे असणे वा ४ भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे"।

(३) जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पेः—'अहं च खलु पडिन्नत्तो अपडिन्नत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं अभिकंख-साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिस्सामि, अहं चावि खलु अपडिन्नत्तो पडिन्नत्तस्स अगिलाणो गिलाणस्स अभिकंख-साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए : (४) [1] आहट्टु परिन्नं आनक्खेस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि, [2]आ० प० आ० आ० च नो सा०, [3]आ० प० नो० आ० आ० च सा०, [4]आ० ० नो आ० आ० च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो सा०, '—एवं से अहा-किट्टियमेव धम्मं समभिजाणमाणे सत्ते विरए सुसमाहिय-लेस्से। तत्थावि .... (यथा २९, १६.) .... आणुगामियं–ति बेमि ॥

८–६

(१) जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिए पाय-बिइएण, तस्स नो एवं भवइ : ' बिइयं वत्थं जाइस्सामि '। से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ....(यथा २९, ६–१३. नवरं **जुण्णाइं वत्थाइं** स्थाने **जुण्णं वत्थं** पठनीयं; **अपलि० गाम० ओम०** ; तथा **अदु वा सन्तरुत्तरे अदु वा ओमचेलए** वर्जनीयं ; तथैव **वत्थधारिस्स** स्थाने **तस्स भिक्खुस्स** भणनीयं)....एवं भवई : ' एगो अहमंसि ; न मे अत्थि कोइ न याहमवि कस्सइ, ' एवं स एगाणियमेव अप्पाणं समभिजाणेज्जा ; लाघवियं....(यथा २९, ११.)....समभिजाणिया ।

(२) से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ आहारेमाणे नो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारेज्जा आसाएमाणे, दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं नो संचारेज्जा आसाएमाणे। से अणासायमाणे लाघवियं....(यथा २९, ११.)....समभिजाणिया ।

(३) जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ : ' से गिलामि च खलु अहं इमम्मि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेणं परिवहित्तए, ' से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता ' कसाए पयणुए किच्चा '

समाहियच्चे फलगावयट्ठी
उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे

(४) अणुपविसित्ता गामं वा नगरं वा खेडं वा कब्बडं वा मडम्बं वा पट्टणं वा दोण-मुहं वा आगरं वा आसमं वा सन्निवेसं वा निगमं वा रायहाणिं वा तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाइत्ता से तमायाए एगन्तमवक्कमेज्जा, एगन्तमवक्कमित्ता अप्पण्डे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-सन्ताणए पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तणाइं सन्थरेज्जा, तणाइं सन्थरेत्ता एत्थ वि समए इत्तिरियं कुज्जा ।

(५) तं सच्चं : सच्चा-वाई ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे
आईयट्ठे आणाईए चेच्चाण भेउरं कायं
संविहुणिय विरूव-रूवे परीसहोवसग्गे अस्सिं विस्सम्भणयाए भेरवमणुचिण्णे । तत्थावि.... (यथा २९, १६.)....आणुगामियं '—ति बेमि ॥

८–७

(१) जे भिक्खू अचेले परिवुसिए, तस्स णं एवं भवइ: ' चाएमि अहं तण-फासं अहियासेत्तए, सीय- फा० अ०, तेओ-फा० अ०, दंस-मसग-फा० अ०, एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेत्तए; हिरिपडिच्छायणं च'हं नो संचाएमि अहियासेत्तए, ' एवं से कप्पइ कडिबन्धणं धारेत्तए । अदु वा तत्थ परक्कमन्तं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसन्ति, सीय- फा० फु०, तेओ-फा० फु०, दंसमसग-फा० फु०, एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेइ । अचेले लाघवियं....(यथा २९, ११.)....समभिजाणिया ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२) [1]जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ : ' अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा ४ आहट्टु दलइस्सामि आहडं च साइज्जिस्सामि, [2]जस्स....द० आ० च नो सा०, [3]जस्स ....नो द० आ० च सा०, [4]जस्स....नो द० आ० च नो सा०, (३) अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण अहेसणिज्जेण अहा-परिग्गहिएण असणेण वा ४ अभिकंख साहाम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए, अहं चावि तेण....साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जिस्सामि '—5

(३) लाघवियं....(यथा २९, ११.)....समभिजाणिया।

(४) जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ : ' से गिलामि....(यथा ३०, १३–२२.)....समए कायं च जोगं च इरियं च पच्चक्खाएज्जा। तं च सच्चं....(यथा ३०,२३–२६.)....आणुगामियं—ति बेमि ॥

८–८

१. अणुपुव्वेण विमोहाइं जाइं धीरा समासज्ज
वसुमन्तो मइमन्तो सव्वं नच्चा अणेलिसं
२. दुविहं पि विइत्ताणं बुद्धा धम्मस्स पारगा
अणुपुव्वीए संखाए कम्मुणाओ तिउट्टइ।
३. कसाए पयणुए किच्चा अप्पाहारो तिइक्खए;
अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अन्तियं,
४. जीवियं नाभिकंखेज्जा मरणं नो वि पत्थए:
दुहओ वि न सज्जेज्जा जीविए मरणे तहा।
५. मज्झत्थो निज्जरा-पेही समाहिमणुपालए;
अन्तो बहिं विओसज्ज अज्झत्थं सुद्धमेसए।
६. जं किंचुवक्कमं जाणे आउक्खेमस्समप्पणो,
तस्सेव अन्तरद्धाए खिप्पं सिक्खेज्ज पण्डिए।
७. गामे वा अदु वा रण्णे थण्डिलं पडिलेहिया
अप्प-पाणं तु विन्नाय तणाइं सन्थरे मुणी।
८. अणाहारो तुयट्टेज्जा, पुट्ठो तत्थ'हियासए,
नाइवेलं उवचरे माणुस्सेही वि पुट्ठवं।
९. संसप्पगा य जे पाणा जे य उड्ढमहेचरा
भुञ्जन्ते मंस-सोणियं न छणे न पमज्जए।
१०. पाणा देहं विहिंसन्ति—ठाणाओ न विउब्भमे,
आसवोहिं विचित्तोहिं तिप्पमाणो'हियासए।
११. गन्थेहिं विचित्तोहिं आउ-कालस्स पारए;
पग्गहीयतरं चेयं दवियस्स वियाणओ :
१२. अयं से अवरे धम्मे नायपुत्तेण साहिए :

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आय-वज्जं पडीयारं विजहेज्जा तिहा-तिहा ।
१३ हरिएसु न निवज्जेज्जा, थण्डिलं मुणिया सए,
विओसेज्ज अणाहारो पुट्ठो तत्थ'हियासए ।
१४ इन्दिएहिं गिलायन्तो समियमाहरे मुणी,
तहावि से अगरहे अचले जे समाहिए ।
१५ आपक्कमे पडिक्कमे संकुचए पसारए
काय-साहारणट्ठाए एत्थं वा वि अचेयणे ।
१६. परिक्कमे परिकिलन्ते अदु वा चिट्ठे अहा-यए,
ठाणेण परिकिलन्ते निसिएज्जा य अन्तसो;
१७. आसणे'णेलिसं मरणं इन्दियाणि समीरए ।
कोला'वासं समासज्ज वितहं पादुरेसए,
१८. जओ वज्जं समुप्पज्जे न तत्थ अवलम्बए,
तओ उक्कसे अप्पाणं, सव्वे फासे'हियासए ।
१९. अयं चाययतरे सिया जो एवं अणुपालए :
सव्वगाय-निरोधे वि ठाणाओ न विउब्भमे:
२०. अयं से उत्तमे धम्मे पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे ।
अचिरं पडिलेहित्ता विहरे चिट्ठ माहणे,
२१. अचित्तं तु समासज्ज ठावए तत्थ अप्पगं,
वोसिरे सव्वसो कायं : 'न मे देहे परीसहा' ।
२२. जावज्जीवं परीसहा उवसग्गा य संखाय
संवुडे देह-भेयाए इति पन्ने'हियासए ।
२३. भेउरेसु न रज्जेज्जा कामेसु बहुयरेसु वि,
इच्छा-लोभं न सेवेज्जा धुवं वण्णं सपेहिया,
२४, 'सासएहिं' निमन्तेज्जा---: दिव्वं मायं न सद्दहे ।
तं पडिबुज्झ माहणे सव्वं नूमं विहूणिया ।
२५. सव्वट्ठेहिं अमुच्छिए आउ-कालस्स पारए;
तिइक्खं परमं नच्चा विमोहन्नयरं हियं---ति बेमि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उ व हा ण सु यं

९–१

१. अहा-सुयं वइस्सामि जहा से समणे भगवं उट्ठाय
संखाएँ तंसि हेमन्ते अहुणा-पव्वाइए रीइत्था ।
२. 'नो चेवि'मेण वत्थेणं पीहिस्सामि तंसि हेमन्ते—'
से पारएँ आवकहाए, एयं खु अणुधम्मियं तस्स ।
३. चत्तारि साहिए मासे बहवे पाण-जाइयागम्म
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ।
४. संवच्छरं साहियं मासं जं न रिक्का'सि वत्थगं भगवं,
अचेलए तओ चाई तं वोसज्ज वत्थमणगारे ।
५. अदु पोरिसिं तिरिय-भित्तिं चक्खुमासज्ज अन्तसो झाइ ;
अह चक्खु-भीय-सहिया ते " हन्ता हन्ता " बहवे कन्दिसु ।
६. सयणेहिं वीइमिस्सेहिं इत्थिओ तत्थ से परिन्नाया ;
सागारियं न से सेवे, इति से सयं पवेसिया झाइ ।
७. जे के'इमे अगारत्था, मीसी-भावं पहाय से झाइ
पुट्ठो वि नाभिभासिंसु, गच्छइ नाइवत्तई अञ्जू ।
८. नो सुकरमेगेसिः नाभिभासे अभिवायमीणे,
हय-पुव्वो तत्थ दण्डेहिं, लूसियपुव्वो अप्प-पुण्णेहिं ।
९. फरुसाइं दुत्तिइक्खाइं अइयच्चे मुणी परक्कममाणे
आघाय-नट्ट-गीयाइं दण्ड-जुज्झाइं मुट्ठि-जुज्झाइं
१०. गढिए मिहुं-कहासु समयम्मि नाइ-सुए विसोएँ अद्दक्खू ;
एयाइं सो उरालाइं गच्छइ नायपुत्ते असरणाए ।
११. अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभोच्चा निक्खन्ते;
एगत्त-गए पिहियच्चे से अभिन्नाय-दंसणे सन्ते ।
१२. पुढविं च आउ-कायं च तेउ-कायं च वाउ-कायं च
पणगाइं बीय-हरियाइं तस-कायं च सव्वसो नच्चा
१३. ' एयाइं सन्ति ' पडिलेहे ' चित्तमन्ताइं ' से अभिन्नाय
परिवज्जियाण विहरित्था इति संखाएँ से महावीरे:
१४. ' अदु थावरा य तसत्ताए तसजीवा य थावरत्ताए,
अदु सव्वजोणिया सत्ता, कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१५. भगवं च एवमन्नेसी : ' सोवहिए हु लुप्पई बाले ' ;
कम्मं च सव्वसो नच्चा तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ।
१६. दुविहं समेच्च मेहावी किरियमक्खाय'णेलिस-नाणी
आयाणसोयमइवाय-सोयं जोगं च सव्वसो नच्चा
१७. अइवत्तियमणाउट्टिं समयन्नेसिं अकरणयाए :
जस्सि'त्थिओ परिन्नाया सव्वकम्मावहाओ अदक्खू ।
१८. अहा-कडं न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा य अदक्खू
जं किञ्चि पावगं, भगवं तं अकुव्वं वियडं भुञ्जित्था ।
१९. नासेवई य परवत्थं, पर-पाए वि से न भुञ्जित्था,
परिवज्जियाण ओमाणं गच्छइ संखडिं असरणाए ।
२०. मायन्ने असण-पाणस्स नाणुगिद्धे रसेसु अपडिन्ने;
अच्छिं पि नो पमज्जिया, नो वि य कण्डूयए मुणी गायं ।
२१. अप्पं तिरियं पेहाए अप्पं पिट्ठओ व पेहाए
अप्पं बुइए पडिभाणी पन्थ-पेही चरे जयमाणे ।
२२. सिसिरंसि अद्ध-पडिवन्ने तं वोसज्ज वत्थमणगारे
पसारेतु बाहू परक्कमे नो अवलम्बियाण खन्धंसि ।
२३. एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया
बहुसो अपडिन्नेणं भगवया एवं रीयन्ते—त्ति बेमि ॥

९–२

१. चरियासणाइं सेज्जाओ एगइयाओ जाओ बुइयाओ,
आइक्ख ताइं सयणासणाइं जाइं सेवित्थ से महा-वीरे ।
२. आवेसण-सभा-पवासु पणिय-सालासु एगया वासो
अदु वा पलिय-ट्ठाणेसु पलाल-पुञ्जेसु एगया वासो ।
३. आगन्तारे आरामागारे नगरे वि एगया वासो,
सुसाणे सुन्न-गारे वा रुक्ख-मूले वि एगया वासो ।
४. एएहिं मुणी सयणेहिं समणे आसि प-तेलस वासे;
राइंदियं पि जयमाणे अप्पमत्ते समाहिए झाइ;
५. निद्दं पि नो पगामाए सेवइ य भगवं उट्ठाए;
जग्गावई य अप्पाणं, ईसिं साइयासी अपडिन्ने ।
६. सम्बुज्झमाणे पुनरावि आसिंसु भगवं उट्ठाए
निक्खम्म एगया राओ बहिं चंकमिया मुहुत्तागं ।
७. सयणेहिं तस्सुवसग्गा भीमा आसी अणेग-रूवा यः
संसप्पगा य जे पाणा अदु वा पक्खिणो उवचरन्ति ।
८. अदु कुचरा उवचरन्ति गाम-रक्खा य सत्ति-हत्था य,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदु गामिया उवसग्गा : इत्थी एगइया पुरिसो वा ।

९. इह-लोइयाइं पर-लोइयाइं भीमाइं अणेगरूवाइं,
अवि सुब्भि-दुब्भि-गन्धाइं सद्दाइं अणेग-रूवाइं

१०. अहियासए सया समिए फासाइं विरूव-रूवाइं;
अरइं रइं च अभिभूय रीयई माहणे अबहु-वाई ।

११. सयणेहिं तत्थ पुच्छिसु एग-चरा वि एगया राओ,
अव्वाहिए कसाइत्था; पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ।

१२. " अयमन्तरंसि; को एत्थं ? " " अहमंसि " त्ति " भिक्खु " आहट्टु
अयमुत्तमे से धम्मे : तुसिणीएँ स कसाइए झाइ ।

१३. जंसि प्पेगे पवेवन्ति सिसिरे मारुए पवायन्ते
तंसि प्पेगे अणगारा हिमवाए निवायमेसन्ति:

१४. ' संघाडीओ पविसिस्सामो, एहा य समादहमाणा
पिहिया वा सक्खामो; अइदुक्खं हिमग-संफासा ! '

१५. तंसि भगवं अपडिन्ने अहे-वियडे अहियासए दविए,
निक्खम्म एगया राओ चाएइ भगवं समियाए ।

१६. एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया
बहुसो अपडिन्नेणं भगवया एवं रीयन्ते - त्ति बेमि ॥

९–३

१. तण-फास सीय-फासे य तेओ-फासे य दंस-मसए य
अहियासए सया समिए फासाइं विरूव-रूवाइं ।

२. अह दुचर-लाढं अचारी वज्ज-भूमिं च सुब्भ-भूमिं च,
पन्तं सेज्जं सेविंसु आसणगाइं चेव पन्ताइं ।

३. लाढेहिं तस्सुवसग्गा बहवे: जाणवया लूसिंसु,
अह लुक्ख-देसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु निवइंसु ।

४. अप्पे जणे निवारेइ लूसणए सुणए डसमाणे,
' छुच्छुक् ' कारेन्ति आहन्तुं " समणं कुक्कुरा डसन्तु " त्ति ।

५. एलिक्खए जणे भुज्जो बहवे वज्ज-भूमिं फरुसासी,
लट्ठिं गहाय नालीयं समणा तत्थ एव विहरिंसु;

६. एवं पि तत्थ विहरन्ता पुट्ठ-पुव्वा अहेसि सुणएहिं,
संलुञ्चमाणा सुणएहिं—दुच्चरगाणि तत्थ लाढेहिं ।

७. निहाय दण्डं पाणेहिं तं कायं वोसज्जेमणगोर
अह गाम-कण्टए, भगवं ते अहियासए अभिसमेच्चा,

८. ' नाओ ' संगाम-सीसे व पारए तत्थ से महावीरे ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं पि तत्थ लाढेहिं अलद्ध-पुव्वो वि एगया गामो;
९. उवसंकमन्तमपडिन्नं गामन्तियं पि अप्पत्तं
पडिनिक्खमित्तु लूसिंसु : " एयाओ परं पलेहि ! " त्ति ।
१०. हय-पुव्वो तत्थ दण्डेणं अदु वा मुट्ठिणा अदु फलेणं
अदु लेलुणा कवालेणं ; " हन्ता हन्ता " बहवे कन्दिंसु । 5
मंसाणि छिन्न-पुव्वाइं, ओट्ठभियाएँ एगया कायं
परिस्सहाइं लुञ्चिंसु अदु वा पंसुणा उवकरिंसु,
१२. उच्चालइय निहणिंसु अदु वा आसणाओ खलइंसु—
वोसट्ठ-काएँ पणयासी दुक्ख-सहे भगवं अपडिन्ने ।
१३. सूरो संगामसीसे व संवुडे तत्थ से महावीरे 10
पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगवं रीइत्था ।
१४. एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया
बहुसो अपडिन्नेणं भगववया एवं रीयन्ते—त्ति बेमि ॥

९—४

१. ओमोयरियं चाएई अपुट्ठे वि भगवं रोगेहिं;
पुट्ठो व से अपुट्ठो वा नो से साइज्जइ तेइच्छं । 15
२. संसोहणं च वमणं च गायब्भंगणं सिणाणं च
संबाहणं न से कप्पे दन्त-पक्खालणं परिन्नाए ।
३. विरए य गाम-धम्मेहिं रीयइ माहणे अबहु-वाई,
सिसिरम्मि एगया भगवं छायाएँ झाइ आसी य ।
४. आयावई य गिम्हाणं अच्छइ उक्कुडुए अभितावे, 20
अदु जावइत्थ लूहेणं ओयण-मन्थु-कुम्मासेणं ।
५. एयाणि तिण्णि पडिसेवे अट्ठ मासे य जावए भगवं,
अपिइत्थ एगया भगवं अद्ध-मासं अदु वा मासं पि ।
६. अवि साहिए दुवे मासे छप्पि मासे अदु वा अपिवित्था,
राओवरायं अपडिन्ने अन्न-गिलायमेगया भुञ्जे । 25
७. छट्ठेणमेगया भुञ्जे अदु वा अट्ठमेण दसमेणं,
दुवालसमेण एगया भुञ्जे पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ।
८. नच्चाण से महावीरे नो वि य पावगं सयमकासी
अन्नेहिं वी न कारेत्था कीरन्तं पि नाणुजाणित्था ।
९. गामं पविस्स नगरं वा घासमेसे कडं परट्ठाए 30
सुविसुद्धमेसिया भगवं आयय-जोगयाएँ सेवित्था ।
१०. अदु वायसा दिगिञ्छन्ता, जे अन्ने रसेसिणो सत्ता
घासेसणाएँ चिट्ठन्ते सययं निवइए य पेहाए,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११. अदु माहणं व समणं वा गाम-पिण्डोलगं व अइहिं वा
सोवागं मूसियारिं वा कुक्कुरं वा विविहं ठियं पुरओ,
१२. वित्ति-च्छेयं वज्जन्तो तेस'प्पत्तियं परिहरन्तो
मन्दं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घासमेसित्था ।
१३. अवि सूइयं व सुक्कं वा सीय-पिण्डं पुराण-कुम्मासं
अदु बोक्कसं पुलागं वा लद्धे पिण्डे अलद्धए दविए ।
१४. अवि झाइ से महावीरे आसत्थे अकुक्कुए झाणं,
उड्ढं अहे य तिरियं च लोएं झायइ समाहिमपडिन्ने ।
१५. अकासी विगय-गेही य सद्द-रूवेसु अमुच्छिए झाइ
छउमत्थो वि परक्कममाणे न पमायं सइं पि कुव्वित्था ।
१६. सयमेव अभिसमागम्म आयय-जोगमाय-सोहीए
अभिनिव्वुडे अमाइल्ले आवकहं भगवं समियासी ।
१७. एस विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया ।
बहुसो अपडिन्नेणं भगवया एवं रीयन्ते—त्ति बेमि ॥

॥ समत्तो पढमो सुयक्खन्धो ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकारादि-शब्दानुक्रमणिका

अ च

अइदुक्ख अतिदुःख
अइमाण अतिमान
अइवत्तिय अतिवृत्तिक
अइवाइय अतिपातिक
अइवाय अतिपात
अइविज्ज अतिविद्य
अइविज्जं अतिविद्वान्
अइविण्णू अतिविज्ञ
अइवेल अतिवेल
अइहि अतिथि
अक्कन्द आक्रन्द
अगणि अग्नि
अगार (गृह)
अग्ग अग्र
अंगुलि —
अच्चा अर्चा
अच्छायण आच्छादन
अच्छि अक्षि
अजिण अजिन
१ अज्ज अद्य,
२ अज्ज आर्य
अज्जव आर्जव
अज्जविया आर्जवता
१ अज्झत्थ अध्यात्म
२ अज्झत्थ अध्यस्त
अज्झत्थिय अध्यात्मिक
अज्झप्प अध्यात्म
अट्ट आर्त
१ अट्ठ अर्थ
२ अट्ठ अष्टन्
अट्ठम अष्टम
अट्ठया अर्थता
१ अट्ठिण्० अर्थिन्,
२ अट्ठिण् अस्थिन्
अट्ठिय आर्थिक
१ अणु अणु,
२ अणु अनु
अणुगामं अनुग्रामम्
अणुगामिय अनुग्रामिक
अणुट्ठइण्० अनुस्थायिन्
अणुट्ठाण अनुष्ठान
अणुदिसा अनुदिश्
अणुधम्मिय अनुधर्मिक
अणुपस्सिण्० अनुदर्शिन्
अणुपुव्व अनुपूर्व
अणुवसु अनुवसु
अणुवीइ अनुविचि
अणुसंवेयण अनुसंवेदन
अण्डय अण्डज
अत्तण्० आत्मन्
अत्तत्त आत्मत्व
अत्तत्ता आत्मता,–आत्मत्राण
अत्थ अर्थ
अत्थिण्० अर्थिन्
अदु यद् उ
अदु वा यद् उ वा,–यदि वा, यद्वा
१ अद्ध अध्वन्,
२ अद्ध–अर्ध
अन्तराइय आन्तरायिक
अन्तसो अन्ततः
अन्तिय अन्तिक
अन्तो अन्तर्
अन्धत्त अन्धत्व
अन्न अन्य
अन्नत्थ अन्यत्र
अन्नयर अन्यतर्
अन्नहा अन्यथा
अन्नेसिय अन्वेषिक
अप्प अल्प
अप्पग आत्मक
अप्पण्० आत्मन्
अब्भंगण अभ्यङ्ग,–अभ्यञ्जन
अभिताव अभिताप
अभिवाय अभिवात
अभिसंकिण्० अभिशङ्किन्
अभिसेय अभिषेक
अमरायइ अमरायत (अमर इवाचरति)
अम्बिल आम्ल
अयं (सर्वनाम) अयं, अणेण,अस्स, अस्सिं
अरहन्त्० अर्हत्
अरिह अर्ह
अरिहइ अर्हति
अलद्धग अलब्धक
अवं अवाञ्च्
अवचइय अपचयिक
अवम हीन
अवमारिय अपस्मारिक
अवयट्ठि अवतष्टि
अवर अपर
अवसक्किण्० अपष्वष्किन्
अवि आपे
अस् (धातु) अंसि, अत्थि, सन्ति, सिया, असिया, आसि, सन्त, अणुसिया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असण अशन
अह् (धातु) आहु, उयाहु, आहुय
१ अह अथ
२ अह अधस्
अहं (सर्व०) अहं, मे, मए, मम, महं, मे
अहा यथा
अहिय अधिक
अहुणा अधुना
अहे अधस्
अहो अधस्
१ अहो अहर्
२ अहो (आश्चर्ये)

आइ आदि
आइय आदिक
आईय आदिक,–आ अतीत
१ आउ आपस्
२ आउ आयुस्
आउट्टी आकुट्टी
आउय आयुष्क
आउर आतुर
आउरिय आतुरक
आउसन्त्० आयुष्मन्त्
आएस आदेश
आएसिण्० आदेशिन्
आकंखिण्० आकांक्षिन्
आकेवलिय आकेवलिक
आगइ आगति
आगन्तार प्रसङ्गा यात्वा आगत्य वा यत्र तिष्ठन्ति (व्याख्या)
आगमण आगमन
आगमिस्स आगमिष्य
आगर आकर
आगास आकाश
आघवेत्तग आख्यापयितृक
आणन्द आनन्द
आणा आज्ञा
आणुगामिय आनुगामिक
आणुधम्मिय आनुधार्मिक
आप् (धातु) आयतर, आत्ततर, पत्त, अपत्त, पप्प
आम अपक्व
आय,–या आत्मन्
आयग आत्मक
आयंक आतङ्क
आयत्त आत्मत्व
आययण आयतन
आयरिय आचार्य
आयवन्त्० आत्मवन्त्
आयाण आदान
आयार आचार
आरम्भ (पापजनक प्रवृत्ति)
आराम —
आरिय आर्य,–आचार्य
आलइय आलयिक
आलुम्प —
आलोभिण्० आलोभिन्
आवकहा यावत्कथा
आवट्ट आवर्त
आवन्त्० यावन्त्
आवसह आवसथ
आवह —
आवास —
आवेसण आवेशन (शून्यगृह)
आस् (धातु) आसंसु, आसिसु, आसीण, उदासीण
आस आश (प्रातराशादि)
आसंसा आशंसा
आसण आसन
आसणग आसनक
आसम आश्रम
आसव आश्रव
आसा आशा
आसाय आस्वाद
आसु आशु
आसेवणा आसेवना
आसेवणया आसेवनता
आहच्च (आहत्य)
आहरण —
आहाकड यथाकृत
आहार —
आहारग आहारक

इ (धातु) एन्ति, उवेइ, एचा, अचेइ, अईय; समेई, समियं, समेच्चा; अभिसमेचा
इओ इतस्
इच्च्० इति (इच्चत्थ=इत्यर्थं)
इच्छा —
इण (एण) इदमर्थक
इति (इच्च्०)
इत्तरिय / इत्तिरिय } इत्वरक
इत्थिया स्त्रीका
इत्थी स्त्री
इन्दिय इन्द्रिय
इम (सर्वनाम) इमं, इमा, इमेण, इमस्स, इमाम्मि, इमे, इमाओ
इय इति
इयर इतर
इयाणिं इदानिम्
इरिया ईर्या
इव, व इवार्थक
१ इस् (धातु) एसे, एसन्ति, एसए, एसित्था, एसिया; अन्नेसन्ति, ०सिन्ति; पाउरेसए, पाउडुएसए
२ इस् (धातु) इच्छसि, इच्छिया-निच्छिय
इसि ऋषि
इह,–(हं) इहार्थक
ईक्ष् (धातु) उवेहइ, उवेह, उवेहाइ, उवेहमाण; अणुवे०; अणुवेहाए, उवेहा; समुप्पेहमाण, समुवेहमाण, पेहमाण, ० मीण; पेहाए, संपेहाए–पेहाए, संपेहिया
ईरय् (धातु) रिय, उदीरिय, समीरए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईसिं ईषद्

उ तु
उक्कुडुय उत्कटुक
उग्घायण उद्घातन
उच्चा उच्चार्थक
उच्चालइत्तर्- } उच्चालयितृ
उच्चालइय } उच्चालयिक
उच्चावय उच्चावच
उजु-उज्जु ऋजु, अञ्जु
उज्जुकड,-डे ऋजुकृत्, ऋजुकारी
उट्ठाइण्० उत्थायिन्
उड्ढ ऊर्ध्व
उण्ह उष्ण
उत्तम —
उत्तर —
उत्तासइत्तर्० उत्त्रासयितृ
उत्तिंग —
उद उदकार्थक
उदय उदक
उदीण उदीचीन
उद्दवइत्तर्०
उद्देवत्तर्० } उद्द्रापयितृ
उद्देस उद्देश
उब्भिं उद्भिद्
उभय —
उम्मग्गा
उम्मुग्गा } उन्मग्ना
उम्मज्जा
उम्मुज्जा } उन्मज्जा
उयर उदर
उयरिण्० उदरिन्
उयाहु उताहो
उर उरस्
उराल उदार
उवक्कम उपक्रम
उवगरण उपकरण
उवचइय उपचयिक
उवचय उपचय
उवरइ उपरति
उवराय उपरात्र
उ (ओ) ववाइय औपपादि(ति)क
उववाय उपपात
उवस (स्स) ग्ग उपसर्ग
उवसन्ति उपशान्ति
उवसम उपशम
उवहाण उपधान
उवहि उपधि
उवहिय उपधिक
उवाय उपाय
उवाहि उपाधि
उवेहा उपेक्षा
उव्वेग उद्वेग
उसणिज्ज उष्णीय
उसिण उष्ण
ऊरु —

ऋ (धातु) अच्छइ
ए— (सर्वनाम) एहिं
एक्क एक
एग (अणेग) एक (अनेक)
एगइय एकतिक
एगओ एकतस्
एगत्त एकत्व
एगन्त एकान्त
एगयर एकतर
एगया एकदा
एगागिण्० एकाकिन्
एगाणिय ,,
एज वायु
एण, इण (सर्व०) एन-एणं, इणं
एत्थ (त्थं) अत्र
एय (सर्व०) एतदर्थक—एयं, एयाओ, एयस्स, एए, एयाइं, एयानि एएहिं, एएसु
एयावन्त्० एतावन्त्
एलिक्खग ईदृशक
एलिस (अणेलि०) ईदृश (अनीदृ०)
एव, व एवार्थक
एवं एवमर्थक
एस एष
एसग एषक
एसणा एषणा
एसिण्० एषिन्
एह एध

ओ वाक्यपूरणार्थक
ओग्गह अवग्रह
ओट्ठ ओष्ठ
ओम अवम-हीन
ओमाण अवमान
ओय ओज
ओयण ओदन
ओयरिया औदर्य
ओसा अवश्या
ओववाइय औपपादि(ति)क
ओह ओघ
ओहाण अवधान

क (सर्वना०) के, को, का, किं, कं, अकस्मात्, कंसि; केइ, कोइ, किंचि, अकिंचण, कंचणं, कस्सइ, कांहिंचि, केइ (बहु०), केय
कओ कतस्
कक्खड,-०ट कर्कश
कंखा कांक्षा
कंखिण्० कांक्षिन्
कज्ज कार्य
कट्ठ काष्ठ
कड,-०ट कृत
कडि कटि
कडुय कटुक
कण्टग कण्टक
कण्डग काण्डक
कण्डूय् (धातु) कण्डूयए
कण्ण कर्ण
कत्थ कुत्र
कत्थइ कुत्रचित्
कथय् (धातु) कहिय, परिकहिज्जइ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कन्ध स्कन्ध
कप्प कल्प
कब्बड कर्बट
कम्प् (धातु) अविकम्पमाण
कम्बल —
कम्म कर्मन्
कय (विक्रय) क्रय (विक्रय)
कयवर कचवर
कयाइ कदाचित्
कर ,० री —
करण —
करणया करणता
कलह —
कलुण करुण
कल्लाण कल्याण
कवाल कपाल
कशाय् (धातु) कसाइत्था
कषायय् ,, कसाइय, संकसाइय कसाइए
कसाइण्० कषायिन्
कसाय कषाय
कसायय कषायक
कहंकहा कथंकथा
कहा कथा
काउ काय
कांक्ष् (धातु) कंखेज्जा, अभिकंखेज्जा, अवकंखइ, अवकंखन्ति, अणवकंखमाण, ०कंखे०
काणत्त काणत्व
काणिय काणक
काम —
कामिण्० कामिन्
काय —
कायर कातर
कार —
कारण —
कारिण्० कारिन्
काल —

कासंकस कार्षकष
काहीय कथिक
किं —
किड्डा क्रिडा
किण्ह कृष्ण
कित्ति (अकि०) कीर्ति (अकी०)
किमण कृपण
किरिया क्रिया
किव (वि) ण कृपण
किस कृश
किह कथा
कीर्तय् (धातु) किट्टइ, किट्टे
कुओ कुतस्
कुक्कुय कौकृत
कुक्कुर —
कुच् (धातु) अपलिउञ्चमाण, संकुचए, संकुचिय, संकुचमाण
कुचर चोरो पारदारिया य (व्याख्या)
कुट्ट् (धातु) आउट्टे, विउट्टन्ति
कुट्ठिण्० कुष्ठिन्
कुणिय कुणिक
कुण्टत्त कुण्टत्व
कुण्डल —
कुन्त —
कुन्तग कुन्तक
कुप् (धातु) कुप्पन्ति, कुप्पेज्जा
कुम्भार —
कुम्म कूर्म
कुम्मास कुल्माष
कुल —
कुस कुश
कुसल कुशल
कुसील कुशील
कूर क्रूर
१ कृ (धातु) करेमि, करेइ, करेन्ति, करए, कुज्जा, कुव्वइ, अकरेसुं, अकरिस्सुं, अकासी, अगासं, कुव्वित्था; करिस्सं, करिस्सामि; करिस्सइ, करिस्सामो, करन्त्,-अकुर्वन्त्, कुव्वमाण; गड, अकड, दुक्कड, सुकड, कय, किरिय, कायव्व, अकरणिज्ज, अकरणीय; कट्टु, किच्चा; कज्जइ, किज्जइ, कज्जन्ति, कीरन्त, कीरमाण; कारेइ कारेन्ति, कारवे, कारेत्था, कारवेसुं, काराविस्सं, काराविस्सुं, कारावेस्सं; पकरन्ति, पकरेन्ति, पकुव्वइ, पकुव्वमाण; पगड, संखय
२ कृ (धातु) उवकरिंसु
कृश् (,,) कसेइ
कृष् (,,) उक्कसे, उक्कसिस्सामि, विउक्कसे, वुक्कसिस्सामि, अवकस्सणं
क्लृप् (धातु) कप्पइ, पकप्पेइ, कप्पे, कप्पिया; पकप्पयन्ति, पकप्पेन्ति
केयण केतन
कोट्ठ कोष्ठ
कोट्ठिण्- } कुष्ठिन्
कोढिण्- }
कोल (घुणा, उद्देहिया वा; व्याख्या)
कोविय कोविद
कोह क्रोध
क्रन्द् (धातु) कन्दइ, कन्दिंसु
क्रम् (धातु) चंकमित्ता, चंकमिय, चक्कमिय, उवाइक्कन्त, उवाइक्कम्म; अभिक्कमे, अभिक्कममाण, अणभिक्कमे, अणभिक्कममाण, अवक्कमेज्जा, अवक्कमित्ता; अक्कन्त; अणुक्कन्त, विउक्कम्म; निक्कन्त, दुण्णिक्कन्त, निक्कम्म, अभिनिक्कन्त; पडिनिक्कमित्तु; पडिक्कमे, पडिक्कममाण; परक्कमे, परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि; परक्कमन्त, परक्कममाण; दुप्परक्कन्त, विप्परिक्कमन्ति, विप्परिक्कम्म; उवसंकमन्त, उवसंकमित्ता, उवसंकमित्तु
क्री (धातु) किणे, किणावेइ, किणन्त, कीय
क्रुध् (,,) कुज्झे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुग् (धातु) अक्कुट्ठ, आकुट्ठ
कुस् (,,) किलामेयव्व, परिकिलन्त
क्लिश् (,,) किलेसन्ति, परिकिलेसन्ति
क्षण् (,,) छणे
क्षिप् (,,) निक्खिवे, निक्खित्त–
खण क्षण
खणय क्षणक
खन् (धातु) खणह
खन्ध स्कन्ध
खम क्षम
खय क्षय
खलु, खु, हु खलवर्थक
खवय क्षपक
खाइम खादिम
खिस् (धातु) खिसए
खिप्प क्षिप्र
खु खलु
खुज्जिय कुब्जक
खुड्ग–खुड्डिय क्षुद्रक
खेड खेट
खेत्त क्षेत्र
खेम क्षेम
खेय क्षेत्र
खेयन्न खेदज्ञ,–क्षेत्रज्ञ
ख्या (धातु) अक्खाइ, अग्घाइ, आघाइ, आइक्खामो, आइक्खह, आइक्खन्ति,आइक्खे,आइक्खेज्जा, अक्खाति,आइक्ख, अग्घाइस्सामो, आइक्खमाण, अक्खाय, अग्घाय, आघाय, आखाय; अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा; उदाहिय; पच्चक्खाएज्जा; पडियाइक्खे, अव्वाहिय,वाहिय,विक्खाय,–वियक्खाय, वियाहिय; संचिक्खइ, संखाए, संखाय; पडिसंखाय
ग यथा पारग रसग
गइ गति
गण्डिण्० गण्डिन्
गन्थ ग्रन्थ
गन्ध —
गब्भ गर्भ
गम् (धातु) गच्छइ, गच्छन्ति, गच्छेज्जा, गम, गमित्तए; अइयच्च; अणुगच्छन्ति, अणुगच्छमाण, अणुगच्छमाण; आगममाण, ० मीण, आगय, आगमेत्ता, आगम्म, समन्नागय, असम०, अभिसमन्नागय, अभिसमागम्म; नियच्छन्ति,विगय–
गम–यथा पारंगम, तीरंगम
गमण गमन
गरहा (अगरहा) गर्हा (अगर्हा)
गरुय गुरुक
गल —
गलभ् (धातु) पगब्भइ
गवेष् ,, गवेसित्था
गवेसग गवेषक
गह (अग्गह) ग्रह (अग्रह)
गाम ग्राम
गामिण० गामिन्
गामिय ग्रामिक
गाय गात्र
गार अगार
गाह् (धातु) अभिगाहइ
गाहय (गाहिया) ग्राहक (ग्राहिका)
गाहावइ गृहपति
गिद्धि गृद्धि
गिम्ह ग्रीष्म
गिरि —
गिलासिण– ग्लासिन्
गिलासिणी ग्लासिनी
गिह गृह
गीय गीत
गीव ग्रीव
गुण —
गुत्ति गुप्ति
गुप् (धातु) गुत्त, अगुत्त, दुगुञ्छमाण
गुप्फ गुल्फ
गुप्फग गुल्फक
गुरु —
गुरुग गुरुक
गुहा —
गृ (धातु) जागरन्ति, जागित्ता, जगमावइ
गृध् (धातु) गिज्झे, गिद्ध, अणुगिद्ध, परिगिज्झइ
गेद्धि गृद्धि
गोमय —
गोय गोत्र
गोयर गोचर
ग्रथ् (धातु) गढिय
ग्रभ् ग्रह् ,, गहिय, गहाय, अनिगिज्झ,अपरिग्गहमाण,० मीण, अपरिग्गहेमाण, परिगिज्झ, पगहीयतरा
ग्ला (धातु) गिलाएमि, गिलाणामि, गिलामी, गिलाइ, गिलाएज्जा, गिलायन्त, गिलाण, अगिलाण, गिलाय, परिगिलायमाण
घर गृह
घस् (धातु) परिघासेत्तुं, दिगिच्छन्त, दिगिच्छिन्त, दिगिच्छिन्ता, दिगिच्छेन्ता
घाण घ्राण
घातय् (धातु) घायए, घायमाण, घायमीण
घास ग्रास
घृष् (धातु) परिघेत्तव्व, परिघेयव्व
घोर —

च, (वॉ, या, अ) च आर्थक
चउत्थ चतुर्थ
चउप्पय चतुष्पद
चउरंस चतुरंश
चक्खु चक्षु
चत्तारि चत्वारि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चम्म चर्मन्
चयण च्यवन
चय —
चर् (धातु) चरे, चरेज्जा, अचारी, अणुचिण्ण, उवचरन्ति, उवचरे, वियरिंसु, संचरिज्जा, अणुसंचरइ
चर —
चरिया चर्या
चल् (धातु) चलेमाण, उच्चालिय
चल (अचल) —
चवण (चयण) च्यवन
चाइण्- त्यागिन्
चाय् (धातु) निकाय, (निकाय्य, निकाय्य, निकाएऊण, निकाएयव्वा)
चारिण्- चारिन्
१ चि (धातु) संसंचियाणं
२ चि ,, अणुवाइ(य) अणुविचिय
चिट्ठा चेष्टा
चित् (धातु) चेएमि चेएइ
चित्त (अचित्त) —
चित्तमन्त चित्तमन्त्
चित्तमन्तग ,,
चिन्तय् (धातु) अणुविचिन्तिय
चिर —
चुद् (धातु) चुइय (चोइओ)
चेइ चयइ (त्यज्)
चेयण (अचे०) चेतन (अचे०)
चेल (अचे०) वस्त्रार्थक
चेलग, चेलिय चेलक
चेय् (धातु) विपरिचिट्ठइ, परिविचिट्ठिसु
चोर चौर
च्यु (धातु) चुय

छ षट्
छट्ठ षष्ठ
छण क्षण
छणण क्षणन
छद् (धातु) पलिओच्छन्न, पलिच्छन्न, परिच्छन्न
छन्द छन्दस्
छाया —
छिद् (धातु) छिज्जइ, छिन्देज्ज, छिन्दह, छिन्न, छित्ता: वोच्छिन्देज्जा, अव्वोच्छिन्न; अच्छे, अच्छेज्ज परिच्छिन्दिय, पलि०
छु छुक्-(छुच्छुक्कारेन्ति)
छेत्तर्-छेतृ
१ छेय छेक
२ छेय छेद

ज यथा अण्डज पोतज
ज (सर्वनाम य) जे, (एक-बहु०) जो, जं, जा, जेण, जाए, ३, जस्स, जंसि, जाइं, जाओ, जेहिं, जेसिं, जेसु
जइ यदि
जओ यतः
जंघ —
जण जन
जणग जनकं
जणवय जनपद
जत्थ यत्र
जन्, जा (धातु) जायइ, जाय, जणयन्ति, अभिसंजाय
जन्तु —
जम्म जन्म
जरा —
जराउ जरायु
जहा यथा
जाइ जाति
जाईय जातिक
जागर —
जाण यान
जाणवय जानपद
जाणु जानु
जाम याम
जाय जात
जाया यात्रा
जावन्त्, जाव यावन्त्, यावज्जीवम्, यावन्ती
जि (धातु) विइत्ता, विएत्तु
जिण जिन
जिब्भा जिव्हा
जीव् (धातु) जीविस्सामो, जीविउं, जीविउ-काम
जीव —
जीविण्- जीविन्
जीविय जीवित
जीहा जिव्हा
जुइमन्त्० द्युतिमन्त्
जुज्झ युध्य
जुद्ध युद्ध
जुस् (धातु) झोसेमाण, अझोसयन्त
जूर् (धातु) जूरइ, जूरह
जृ ,, जरेहि, जुण्ण, परिजुण्ण
जोग योग
जोगया योगता
जोणि योनि
जोणिय योनिक
जोव्वण यौवन
ज्ञा (धातु) जाणइ, जाणेज्जा, जाण, जाणे; जाणाहि, जाणह, जाणेह; अन्नेसी, अन्नेसिं, जाणन्त्; अजाणन्त्, अयाणन्त्, जाणित्ता, जाणित्त; नच्चा, नच्चाण; अणुजाणइ, अणुजाणए, अणुन्नाइ, अणुजाणित्था, समणुजाणइ, स० जागाइ, स० जाणेज्जा, स० जाणमाण,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०मीण; अभिजाणइ, ०याणइ, अभिन्नाय, समभिजाणिया, स० जाणेज्जा, स० जाणाहि, स० जाणमाण, अवयाणइ, अवयाणन्त्; आजाण, आयाण, ०यायाणह, आणाए, आणवेज्जा, आणावेज्जा, अज्जावेयव्व, आणावे०; परिजाणामि, परिजाणइ; परिजाणन्त्, अप०; परिन्नाय, अप०, सुप०, सु० जाणियव्व, सु० न्नाए, सु० न्नाया; सुपन्नत्त, पन्नवेमो, पन्नवेह, पन्नवेन्ति; पडिन्नत्त, अप०; विजाणइ, विजाणन्त्, विया०, अवि०, विन्नाय, दुव्वि०, वियाणित्ता

ज्वल् (धातु) उज्जालेत्तए, पज्जालेत्तए, पज्जालेत्ता

झज्झा (माया–लोभेच्छा; व्याख्या)
झायिण्–ध्यायिन्
झाण ध्यान
झिमिय जिम्हिक (अलस्यवाही)
झूस् (धातु) झोसेइ झोसमाण, ०मीण, झोसिय, दुज्झोसिय

ठाण स्थान
डण्ड दण्ड
डाह दाह
णं नूनम्
ण्हारुणी स्नायुनी
त (सर्वना०) तदर्थक. तं, तां, समासगत–तद् यथा तज्झोसमाण, तद्दिट्ठीय; तेण (–णं), तम्हा, तस्स, तंसि, तम्मि; ते, ताइं, तेहिं, तेसिं, तेसु
तइय तृतीय
तओ ततः
तंस त्र्यंश
तक्का तर्का
तच्च तत्त्व
तण तृण
तत्तो ततः
१ तत्थ तत्र
२ तत्थ (अत०) तथ्य (अत०)
तद्–
तन्–
तप्– } तदर्थक
तप् (धातु) आयावेज्जा, आयावई, अभितावे, आयावयइ, आयावेत्तए; पयावेज्जा, पयावेत्तए; परितप्पइ, परितप्पमाण, परियाविज्जन्ति, ०यावज्जन्ति, ०यावेन्ति, ०यावए, ०यावियं, ०यावेयव्व
तम्– तद्
तम तमस्
तर (ग)—(०क)
तर्क् (धातु) ताक्कियाणं,
तव तपस्
तवस्सिण– तपस्विन्
तस्–तद्
तस त्रस
तसत्त त्रसत्व
तह (तथ्य)
तहा तथा
तहागय तथागत
ताण त्राण
तारिस (अता०) तादृश (अता०)
तारिसय तादृशक
तालु —
ताव तावत्
ति इति
तिइक्खा तितिक्षा
तिक् (धातु) तिप्पइ, तिप्पमाण
तिज् ,, तिइक्खए, तिइक्खमाण
तिण्णि त्रीणि–तिहिं
तित्त तिक्त
तिय त्रिक
तिरिक्ख तिर्यक्
तिरिच्छ
तिरिय } तिर्यक्
तिविह त्रिविध
तिहा त्रिधा
तीर –अतीरंगम
तु उ तु
तुट्ट वृत्त
तुच्छ —
तुच्छग तुच्छक
तुमं (सर्वनाम) त्वम्, तव, ते, तुब्भे, तुज्झ, मे
तुला —
तूसणीय तूष्णीक
तॄ (धातु) तरइ, तिण्ण, तारित्तए. अवइण्ण, पइण्ण, आवइण्ण
तेइच्छा चिकित्सा
तेउ, तेओ तेजस्
तो अतस्
त्यज् (धातु) चेइ=चयइ, चयन्ति, चए, चाएमि, चाएस्सामो, चयाहि, चइत्ता, चेच्चा (०णं), चाएमि, चाएइ; परिच्चयन्ति, परिच्चएज्जा, परिच्चज्ज; संचाएमि
त्रस् (धातु) तसन्ति; परिवित्तसन्ति, परिवित्तसेज्जा
त्वग्वर्तय् (धातु) तुयट्टेज्जा
थ स्थ यथा–अगारत्थ, आसणत्थ, छाउमत्थ, भवत्थ, मज्झत्थ
थण स्तन
थंडिल,–०ल्ल स्थण्डिल
थावर स्थावर
थावरत्त स्थावरत्व
थी स्त्री
थूल स्थूल
थोव स्तोक

दंस् (धातु) डसन्तु, डंसन्तु, दसन्तु, डसमाण, डंसमाण, दंसमाण

For Private And Personal Use Only

दंस दंश
दंसण दर्शन
दंसिण्० दर्शिन्
दग उदक
दढ दृढ
दण्ड, डण्ड —
दन्त —
दं दन्त
दम —
दय् (धातु) दयइ, दइय
दया —
दरिसण दर्शन
दविय द्रव्य
दसम दशम
दह् (धातु) दहइ, डहइ, डज्झइ, द०, समादहमाण,०डह०, विडज्झमाण
दा (धातु) दयाइ, देइ, दलइस्सामि, दासामि, दाहामि, दत्त–, अदत्त–, अदिण्ण–; आइयन्ति, आइए, आइयावए; आइज्जमाण, अणाइयमाण, –०माण, आइट्ठु–आइट्टिण्– (आदत्तार्थ); अणाईय; आयाणिज्ज, आयाणीय; आइत्तु, आयाए, आय; उवाइयमाण; पाएज्जा; समाइयन्ति, समायाए, समाय
दाढ दंष्ट्र
दायाद —
दारुण —
दास —
दासी —
दाह डाह —
दाहिण दक्षिण
दिट्ठिमन्त्- दृष्टिमन्त्
दिट्ठीय दृष्टिक
दिय द्विज
दिया दिवा
दिव् (धातु) परिदेवमाण
दिव्व दिव्य
दिश् (धातु) देसिय, समुद्दिस्स, पदेसिय
दिसा दिश्
दि (धातु) क्षये–दीण, असंदीण; संदइ संदिज्जइ वा संदीणो
दीव दीप
दीह दीर्घ
दुक्ख दुःख
दुक्खिण्– दुःखिन्
दुगञ्छणा, दुगु० जुगुप्सा
दुग्गइ दुर्गति
दुच्चर दुश्चर
दुच्चरग दुश्चरक
दुज्झोसग दुर्जुषल्य
दुत्तिइक्ख दुस्तितिक्ष
दुपय द्विपद
दुप्पडिबूहग, ०वूहण दुःप्रतिबृंहणीय
दुब्भि, ०ब्भि दुरभि
दुरइक्कम दुरतिक्रम
दुरणुचर —
दुरभि —
दुरहियासग दुरधिवासनीय
दुलभ दुर्लभ
दुवालसम द्वादश
दुविह द्विविध
दुव्वसु दुर्वसु(–मुनि)
दुसंबोह दुःसम्बोध
दुहओ द्विधातस्
दूतय् (धातु) दूइज्जा, दूइज्जेज्जा, दूइज्जमाण, (हेमन्तगिम्हासु दोसु, रिज्जइ दूइज्जइ, दोहि वा पाएहि रिज्जइ दूइज्जइ–व्याख्या)
दूर —
दृश् (धातु) अद(द)क्खू, दिट्ठ, दुद्दिट्ठ, दट्ठुं, दट्ठूण; दिस्सइ, दीसई, अदिस्समाण, उवदंसेज्जा
देव —
देसिय देशिक
देह —
दो द्वौ
दोणमुह द्रोणमुख
दोस दोष

धम्म धर्म
धम्मय धर्मक
धम्मवन्त्– धर्मवन्त्
धम्मिण्– धर्मिन्
धा (धातु) हिय, अहिय; आढाएमि, आढायमाण,०मीण, आढायमाणाग, अणाढा०; समाहिय, सुसमाहिय–; निहे, निहेज्ज, निहाय, सुप्पणिहिय; परिहिस्सामि; पीहिस्सामि, पेहेसामि, पिहिय–; संधाएइ, संधए, अभिसंधए; आढाएमाण
धाई धात्री
धारिण्० —
धारिय धारिक
धाव् (धातु) संधावइ
धीर —
धुव, धुय ध्रुव
धू (धातु) धुणाइ, धुणे, धूय–, विहूणिया, विधूय–, संविहूणिय
धूयर्– दुहितृ
धृ (धातु) धारेज्जा, धारेत्तए, विधारए
धो (,,) धोवेज्जा, धोय
ध्या (,,) झाइ, झायइ, निज्झाइत्ता

---

१ न ञ
२ न —
नक्ष् (धातु) आणक्खेस्सामि, अण०, आणि०
नगर —
नगिण नग्न
नट्ट नृत्य
नड नट

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नन्दि —
नम् (धातु) नममाण, अनममाण, परिनय, अनवयमाण, उन्नयमाण, परिणमेज्जा, विप्परिणामन्ति, विप्परिणामेन्ति, पणय
नमस्य् (धातु) नमंसिय
नर —
नरग नरक
नश् (धातु) नस्सइ, नासइ, विणस्सइ,
नह नख
१ **नाइ** ज्ञाति (ज्ञातिपुत्र=महावीर)
२ **नाइ** ज्ञाति (ज्ञाति-बल)
नाग —
नाण ज्ञान
नाणवन्त्- ज्ञानवन्त्
नाणिण्- ज्ञानिन्
नाभि —
नाम नामन्
नामय नामक
१ **नाय** ज्ञातृ
२ **नाय** ज्ञात
नायपुत्त ज्ञातृपुत्र
नालीय नालिक
नास नाश
निकरण (नो निकरणाए त्ति, नो निश्चयं कर्तु समर्थः,-व्याख्या)
निकरणया निकरणता
१ **निकाय** —
२ **निकाय** द्रष्टव्य चाय् (धातु)
निकेत (अनि०) —
निक्कम्म निष्कर्म
निगम —
निग्गन्थ निर्ग्रन्थ
निचय —
निच्चग (अनि०) मित्यक (अनि०)
निज्जरा निर्जरा
निज्झाइण्- निध्यायिन्
निज्झोसइत्तर्- निर्झोषयितृ
निडाल ललाट
नितिय (अनि०) नित्य (अनि०)
निद्दा निद्रा
निद्देस निर्देश
नियग —
नियट्ट (अनि०) निवर्त (अनि०)
नियम —
नियाग न्याय
नियाण निदान
निरय —
निरामगन्ध —
निरालम्बनया निरालम्बनता
निरुवट्ठाण निरुपस्थान
निरोह निरोध
निलाट ललाट
निवाइण्- निपातिन्
निवाय निवात
निवेसण निवेशन
निव्वाण (ने०) निर्वाण
निव्वेय निर्वेद
निस्सार निःसार
निस्सेयस निःश्रेयस
निस्सेस (नी०) निःशेष
निस्सेसिय निःशेषिक
निह (अनि०) निघ (हन् धातु)
नी (धातु) उवणीय, सुवणीय, परिणिज्जमाण, विणइत्तु, विणएत्ता
नीया नीचा
नील —
नीसंक निःशङ्क
नीसेस द्रष्टव्य निस्सेस
नुद (धातु) पणुन्न, विप्पणोल्लए विपु०
नूम कर्म, माया (अभिनूम अभिमुख्येन कर्म माया वा)
नेत्त, नेय नेत्र
नेव्वाण निर्वाण
नो न

पइट्ठाण (अप्प०) प्रतिष्ठान, (अप्र०)
पंसु पंशु
पक्कस द्रष्टव्य वक्कस
पक्खालण प्रक्षालन
पक्खिण्- पक्षिन्
पगन्थ प्रग्रन्थ
पगप्प प्रकल्प (सामाचारी = आचार)
पगाम प्रकाम
पगार प्रकार
पग्गह प्रग्रह
पच् (धातु) पयह, परिपच्चमाण पारप०
पच्चात्तम प्रत्यक्तिम
पच्चासिण्- प्रत्याशिन्
पच्छा पश्चात्
पज्जव पर्यय
पज्जवासिय द्रष्टव्य सन् (धातु)
पंचग पञ्चक (शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श)
पट्टण पट्टन
पडिकूल प्रतिकूल
पडिक्क (**पाडियक्क**) प्रत्येक
पडिग्गह प्रतिग्रह
पडिग्घाय प्रतिघात
पडिच्छायण प्रतिच्छादन
पडिन्न (अप०) प्रतिज्ञ (अप्र०)
पाडियक्क द्रष्टव्य पडिक्क
पडिलेहा प्रतिलेखा (लिख् धातु)
पडिवूहणया प्रतिबृंहणता
पडीण प्रतीचीन
पडीयार प्रतीकार
पडुच्च द्रष्टव्य व्रज् (धातु)
पणग पनक
पणिय पण्य
पंडिय पण्डित
पत् (धातु) अइवाएज्जा, अणइवाएमाण, आवडिय, अप्पइय, निव-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इंतु, निवइय; पडिवयमाण; संपयन्ति

पतेलस (पतेरस) प्रत्र्योदश— पनयं पत्थियं वा तेरसमं वरिसं जेसिं वरिसाणं—प्रकर्षेण त्रयोदशं वर्षम्, व्याख्या)

पत्त पत्र

पत्तिय प्रतीति

पत्तेय प्रत्येक

पद् (धातु) आवज्जन्ति, आवायए, परिआवज्जन्ति, समावन्न, अज्झोववन्न, पडुवन्न, समुप्पज्जेन्ति, समुपज्जे, निवज्जइ, निवज्जेज्जा, पडिवन्न, विप्पडिवन्न, संपन्न

पडिसो प्रदिशस्

पन्त प्रान्त

पन्थ पन्थन् (पथिन्)

पन्न प्राज्ञ

पन्ना प्रज्ञा

पन्नाण प्रज्ञान

पन्नाणमन्त्- प्रज्ञानवन्त्

पभंगुर प्रभङ्गुर

पभिइ प्रभृति

पमाइण प्रमादिन्

पमाय प्रमाद

पमुह प्रमुख

पमोक्ख प्रमोक्ष

१ पय पद

२ पय प्रज

पयणु प्रतनु

पयणुग प्रतनुक

पया प्रजा

पर — (परेण परं)

परम —

परिग्गह (अप०) परिग्रह (अप०)

परिग्गहावन्त परिग्रहवन्त्

परिणिव्वाण (अप०) परिनिर्वाण (अप०)

परिन्ना परिज्ञा

परिन्नाण परिज्ञान

परिपाग (पलि०) परिपाक

परिमंडल —

परिमाण —

परिमोक्ख द्रष्टव्य पलिमोक्ख

परियट्टण परिवर्तन

परियंदण परिवन्दन

परियाय पर्याय (श्रामण्यकाल)

परियाव परिताप

परिवन्दण (परिय०) परिवन्दन

परिस द्रष्टव्य फरिस

परिस्सव परिस्रव

परिस्सह परीषह

परीसह ,,

पलाल — (पलालपुञ्ज)

पलास पलाश

पलिपाग द्रष्टव्य परिपाग

पलिबाहर (०हिर) प्रतीपं आहरे चरणं संकोचए देसी भासाए— व्याख्या

पलिमोक्ख (परि०) परिमोक्ष

पलिय कर्म (पलियट्टाण, पलियप्पगन्थ—इत्यादि)

पवंच प्रपञ्च

पवा प्रपा

पवाय प्रवाद

पस् (धातु) पासइ, पासे, पस्स, पास, पासह, पासन्त्—, अपासन्त—, पस्समाण, पासमाण, पासिय; समणुपस्सइ, स० पस्सह, स० पासह

पसु (अप०) पशु (अप०)

पसुग (अप०) पशुक (अप०)

पह पथ

पहु प्रभु

पहेण (प्रहेणक)

पा (धातु) अपिइत्थ, अपिवित्था, पाउं, पायए, अपिवित्ता

पाईण प्राचीन

पाउ प्रादुस्

पाडियक्क द्रष्टव्य पाडिक्क

१ पाण पान

२ पाण प्राण

पाणिण्- प्राणिन्

पामिच्च प्रामित्य (पामिच्चंति अप-रस्मादुच्छिन्नमुद्यत्कम्; व्याख्या)

१ पाय पात्र

२ पाय पाद

पायर्- प्रातर् (यथा प्रातराश)

पार — (यथा पारग, पारगामिन्, पारंगम)

पारुसिया पारुषता

पालय् (धातु) पालेमाण, अणुपालए, ०पालिय, पालिज्जा, ०पालेज्जासि

पाव पाप

पावग पापक

पावाइय प्रावादिक

पावाउय प्रावादुक

१ पास पार्श्व

२ पास पाश

पासग पश्यक

पासणिय प्राश्निक

पासिम दर्शनीय

पासिमन्त्- (पस्सतीति पस्सिमं व्याख्या)

पिच्छ, पिञ्छ पिच्छ

पिट्ट् (धातु) पिट्टइ

पिट्ठ पृष्ठ

पिट्ठि पृष्टि

पिण्ड —

पिण्डोलग पिण्डोलक

पित्त —

पिय (अप्पि०) प्रिय (अप्रि०)

पियर्- पितृ

पीड् (धातु) पिड्डइ, आवलिए,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पवीलए, निप्पीलए
पीढ पीठ
पुच्छ —
पुञ्छण प्रोञ्छन
पुञ्ज —
पुढवी प्रथिवी
पुढो पृथक्
पुण पुनर्
पुणर् ,,
पुणो ,,
पुण्ण पुण्य
पुत्त पुत्र
पुरओ पुरतस्
पुरक्कार पुरस्कार
पुरत्थिम पुरस्तिम
पुरा —
पुराण —
पुरिस पुरुष
पुरे पुरस्
पुलाग पुलाक
पुव्व पूर्व
पुव्वं पूर्व
पुव्वि ,,
पुस् (धातु) पोसन्ति, पोसेन्ति, पोसेज्जा, पोसिय
पूइ पूति
पूयणा पूजन
पूय् (धातु) पुच्छिसु, पुच्छिस्सामो, पुट्ठ, अपुट्ठ; पडिपुच्छमाण
पू (धातु) पुण्ण, पूरइत्तए, पूरेइत्तए, पडिपुण्ण, संपुण्ण
पेच्च प्रेत्य
पेज्ज प्रेयस्
पेसल पेशल
पेहा प्रेक्षा (ईक्ष धातु)
पेहिण्- प्रेक्षिन्
पोरिसी पौरुषी

फरिस स्पर्श
परुष
फरुसया-०सिया परुषता
१ फल —
२ फल फलक
फलग ,,
फलत्त फलत्व
फारुसिया पारुषता
फास स्पर्श
फुसिय स्पृष्ट

बज्झओ बाह्यतस्
बन्ध् (धातु) बद्ध
बन्ध —
बन्धण बन्धन
बंभ ब्रह्मन्
बंभवन्त् ब्रह्मवन्त्
बल —
बलि —
बहि बहिस्
बहिया बाह्यात्
बहिरत्त बधिरत्व
बहु —
बहुग बहुक
बहुयर बहुतर
बहुल —
बहुसो बहुशस्
बाध् (धातु) बज्झमाण, उब्बाहन्ति, उब्बाहिज्जमाण
बाल —
बालया,-लिया बालता
बाहा बाहू
बाहिं बाह्यम्
बाहिर,-०हर बाहिर
बाहिरग बाह्य
बाहु —
बिईय, बी० द्वितीय
१ बीय ,,
२ बीय बीज
बुध् (धातु) अबुज्झमाण, बुद्ध; अवबुज्झन्ति, ओबुज्झमाण; पबुद्ध, पडिबुद्ध; सुपडिबुद्ध, पडिबुज्झ, संबुज्झमाणा, अभिसंबुद्ध
बुसिमन्त बुसी संजमो-व्याख्या
बोहि बोधि
ब्रू (धातु) बेमि, बुइत्त, बुइय; बूया

भइणी भगिनी
भगवन्त् —
भज् (धातु) विभयन्ति, विभए, विभत्त
भज्जा भार्या
भंजग भञ्जक (भू त्ति भूमी, तंए जाया भंजगा, भंजगा वृक्षाः)
भण् (धातु) पडिभाणी
भत्त भक्त
भमुहा भ्रुवुका
भय —
भव —
भाग —
भायर् भ्रातृ
भाव —
भास् (धातु) भासामो, भासह, भासन्ति; भासिय; अभिभासे, अभिभासिंसु
भि भिद्
भिउर,-भे० भिदुर
भिक्खायरिया भिक्षाचर्या
भिक्खु भिक्षु
भिक्खुणी भिक्षुणी
भित्ति —
भिद् (धातु) भिज्जइ, अब्भे
भी —
भीम —
भीय भीत
भुज् (धातु) भुंजे, भुंजह, भुंजित्था, भुंजंत, भुंजिय, अभोच्चा, भोत्तए
भुज्जो भूयस्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भू (धातु) भवइ (होइ), भवन्ति, भवे, भविस्सामि, भविस्सामो; होइ (भवइ), होन्ति, होउ, अहेसि; भूय, अगमिभूय, अभिभूय, पभूय, संभवन्त, असं०, संभूय, अभिसंभूय
भूमि —
भूय भूत
भेउर, भि० भिदुर
भेत्तर भेत्तृ
भेय भेद
भेरव भैरव
भो भोस्
भोइण् भोजिन्
भोग —
भोम भौम
भोयण भोजन
भ्रंश् (धातु) भट्ट
भ्रम —

मइ मति
मईमन्त् मतिमन्त्
मउय मृदुक
मंकड मर्कटक
मंस मांस
मंसु श्मश्रु
मक्कडग मर्कटक
मग्ग मार्ग
मच्चिय मर्त्य
मच्चु मृत्यु
मज्झ मध्य
मज्झिम मध्यम
मट्टिया मृत्तिका
मडंब —
मण मनस्
मणस मनस्
मणि —
मणुस (०स्स) मनुज (०ष्य)
मत्ता मात्रा
मथ् (धातु) पमत्थइ, पमन्थई

मद् (धातु) मज्जेज्जा, पमज्जेज्जा; पमत्त, अप्पमत्त
मद्दविया मार्दवता
मन् (धातु) मन्नसि, मन्नइ, मन्नमाण; मय, दुम्मय, मणुया; मत्ता, मन्ता, सम्मय
मंत्रय् (धातु) निमन्तेज्जा
मन्थु —
मन्द —
ममाइय ममायित
ममाय् (धातु) ममायमाण, अममायमाण, अममायमीण
ममाग (मामग) ममक
मरण —
मसग मशक
महन्त् —
महु मधु
महुर मधुर
मा —
माइण्- मायिन्
माइल्ल (अमा०) ,, (अमा०)
माण मान
माणण मानन (यथा वन्दन, मानन, पूजन)
माणव मानव
माणुस्स मानुष्य
मामग मामक (मदीय)
मायर्- मातृ
१ **माया** मात्रा
२ **माया** माता
३ **माया** —
मार —
मारुय मारुत
मास —
माहण (बंभण, बम्हण) ब्राह्मण
मिंजा मज्जा
मित्त मित्र
मिहुं मिथुन्
मिह मिथस्

मीसी मिश्री
मुच् (धातु) मुच्चइ, मुक्क, मुत्त; उम्मुच्च, मुच्च; पमुच्चसि, पमुचइ, परिविच्छि, विप्पमुक्क; पडिमोइए; विमुक्क, विमुत्त
मुट्ठि (मुंठि) मुष्टि
मुणि मुनि
मुण्ड —
मुत्ति मुक्ति
मुत्तिण्- मूत्रिन्
मुत्तिय मुक्तिक
मुन् (धातु) मुय, मुणिया, सम्मुय
मुह् ,, मुज्झइ, मूढ, सम्मूढ
मुह मुख
मुहुत्त मुहूर्त
मुहुत्ताग मुहूर्तक
मूइण्- मुचिन्
मूय मूक (मूयं, मूइं)
मूयत्त मूकत्व
मूर्छ् (धातु) मुच्छइ, मुच्छमाण, अमुच्छिय
मूल —
मूसियारी मूषिकारी (मार्जारी)
मृ (धातु) मुयच्च (मृतार्च; मृता विनष्टा अर्चा (तेजस्) कषायरूपा येषां ते मृतार्चाः—व्याख्या) संमारए
मृज् ,, संमालिज्जमाण; पमज्जए; पमज्जिज्जा, पमज्जिया, पमज्जिय
मृष् (धातु) आनुसन्त; निस्सरसइ० मुसइ,० मसइ,० मुसइ; मुसन्तो
मेहाविन् मेधाविन्
मेहुणिय मैथुनिक
मेहिण्- मेहिन्
मोक्ख मोक्ष
मोण मौन
मोत्तिय मौक्तिक
मोयण मोचन
मोह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्ला (धातु) मिलाइ
१ य च
२ य ज (यथा अण्डय, उब्भिय, जराउय, पोयय, रसय, संसेयय इत्यादि)
यत् (धातु) जयाहि, जयमाण
यम् ,, जय (यतेत्), आयय, आयतर, नियच्छन्ति, संजमइ, संजय, असंजय०
१ या च
२ या (धातु) जन्ति, दुज्जाय; जावए, जावइत्थ, निज्जाई, नियाइ
याच् ,, जाएज्जा, जाइस्सामि, जाइत्ता
युज् ,, अभिजुंजियाणं, ०जुंजिया; विप्पउंजन्ति
युध् ,, जुज्झाहि

रइ (अर०) रति (अर०)
रक्ख रक्ष
रक्ष् (धातु) सारक्खमाण, ०मीण
रञ्ज् ,, रज्जइ, रएज्जा, रत्त, आरत्त, विरज्जए, विरत्त
रण्ण अरण्य
रभ् (धातु) आरंभे, आरंभमाण, ०मीण, अणारद्ध; समार (रं) भइ ०रभन्ति, ०र(रं)भेज्जासि, ०ज्जा, र (रं) भन्त, र (रं) भमाण, असमारंभ, ०रंभ; समारंभावेइ, ०वेज्जा
रम् ,, रमइ, रमन्ति, रय, अरय उवरय, अणुवरय, विरमेज्जा, विरय, अविरय
रय रजस्
रस —
रसण रसन
राइ रात्रि
राइन्दिय रात्रिदिव
राग —
राय राग
रायंसिण्—राजांसिन्
रायण्-राजन्
रायहाणी राजधानी
ऋ (धातु) रिज्जइ, रीयइ, रीयए, रीयन्ते; रीयन्तु—, रीइत्था, रीयमाण
रिच् (धातु) रिक्क, अइरित्त, रिक्कासि (त्यक्तवान् !)
रीया ईर्या
रुक्ख रूक्ष
रुद् (धातु) रुयन्ति, रोयन्ति
रुध् ,, निरुद्ध
रुश् ,, आरुसियाणं
रुह् ,, अभिरुज्झ, आरुज्झ, समारुहन्ति
रुह (रुह बीजजन्मनि)
रूपय् ,, परूवेमो, परूवेइ, परूवेन्ति;
रूव रूप
रूविण् (अरू०) रूपिन् (अरू०)
रोग —

लज्ज् (धातु) लज्जामो, लज्जमाण
लट्ठि यष्टि
लद्धि लब्धि
लप् (धातु) लालप्पमाण
लभ् ,, लभइ, लभन्ति, लद्ध, अलद्ध, ०द्धुग, लद्धुं, लभिय; उवलब्भ, पडलब्भ, पडिलाभिय
लम्ब् (धातु) अवलंबए, अवलंबियाण
लवण —
लहु लघु
लहुग लघुक
लाघव —
लाघविया लाघवता
लाढ राढा
लाला —
लिख् (धातु) पडिलेहन्ति, पडिलेहे, पडिलेह, सुपडिलेहिय; पडिलेहाए, पडिलेहित्ता, पडिलेहिय, सुपडिलेहिया
लिप् ,, लिप्पइ, ओलिंपेज्जा, उवलिंपेज्जासि, ०लिंपे०, लिंपेज्जा
ली ,, द्रष्टव्य ल्ली ?
लुक्ख रूक्ष
लुञ्च् (धातु) लुंचिंसु, लुंचिय, संलुंचमाण
लुप् ,, लुप्पइ, आलुंपइ, विलुंपइ विलुंपन्ति
लुंपइत्तर्, **लुंपित्तर्** } लुम्पयितृ
लुस् (धातु) लूसिंसु, (पिट्टेन्ति, जिहिंसु) लूसिय
लूसग लूषक
लूसणग लूषणक
लूसिण्-लूषिन्
लूह (लुक्ख) रूक्ष
लेट्ठु, लेलु लेष्टु
लेस्सा लेश्या
लोइय लौकिक
लोग लोक
लोच् (धातु) आलोएइ, आलोएज्ज
लोभ —
लोव लोप
लोहिय लोहित

व इव, एव, वा
वई वाच्
वओ वचस्
वक्कस, प० चिरन्तनधान्योदनम्, पुरातनसक्तुपिण्डम्, बहुदिवस० संभृतगोरसगोधूममण्डकम्—व्याख्या
वंक वक्र
वच् (धातु) वुत्त, वत्तए, वाइय, पवुच्चइ
वच्च व्रज, वाच्य
वज्ज वज्र (—भूमि)
वट्ट वृत्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वट्टमग वर्त्मक
वट्टमग्ग वर्त्मन्-मार्ग
वडभत्त वडभत्व
वडुमग, ०डू०, ० वर्त्मक
वणस्सइ वनस्पति
वण्ण वर्ण
वत्थ वस्त्र
वत्थग वस्त्रक
वत्थु वास्तु
वद् (धातु) वयन्ति, वयासी, वइस्सामि, वयन्त, वयमाण, अनवयमाण; वइत्ता, अणुवयमाण, ०मीण; परिवयन्ति, ०वएज्जा, पवयमाण, ०मणि
वध ,, पहन्ति, वहेन्ति; अभिनिव्वहेज्जा, निव्वहइ
वम् ,, वन्ता
वमण वमन
१ **वय** वयस्
२ **वय** व्रत
१ **वयण** वदन
२ **वयण** वचन
वयस वचस्
ववहार व्यवहार
वस् (धातु) वसे, वसइ, वसित्ता, अहियासेइ, अहियासए, अहिसेज्जासि, अहियासमाण, अणहियासेमाण, अहियासिय, अहियासेत्तए; अणुवासेज्जासि; आवसे, आवसन्त, परिवुसिय; संवसइ.
वस वश
वसा —
वसु (वसु द्रव्यम्)
वसुमन्त् —
वह् (धातु) वज्झमाण; परिवहित्तए
वह वध
१ **वा व** वा (विकल्पार्थक)
२ **वा** (धातु) पवायन्त
३ **वा** (धातु) उद्दायन्ति, उद्दवए, उद्दवेयव्व
वाइण् वादिन्
वाउ वायु
वागरण व्याकरण
वाम —
१ **वाय** वात
२ **वाय** वाद
वायस —
वाया (वाच्)
वाला (चमरी)
१ **वास** वर्ष
२ **वास** —
१ **वासग** वर्षक,
२ **वासग** वाशक
१ **वि** अपि
२ **वि** विद्
विइगिच्छा, ० **गिंच्छा** विचिकित्सा
विइमिस्स व्यतिमिश्र
विउ विदु
विओवाय व्यवपाद, व्यापात; व्यतिपात
विक्कय विक्रय
विग्गह विग्रह
विच् (धातु) विगिंचइ, विगिंचमाण, विवित्त, विगिंचित्ता
विचित्त विचित्र
विजय —
विजा (या) णग विजानक
विज्जंत् विद्वन्
विज्जा विद्या
विणइण्–विनयिन्
विणय विनय
विणा विना
वितण्ड —
वितद्द वितर्द
वितह वितथ
वित्त —
वित्ति वृत्ति
१ **विद्** (धातु) विइत्ता, विइत्ताणं, वेएइ, वेएज्जा, वेयण, पवेएन्ति, पवेयन्ति, पवेयए, पवेएस्सामि, पवेयइस्सामि, पवेइय, पडिवेयमाण; विप्पडिवेएइ, पडिसंवेयइ, प० वेदइ, प० वेएइ प० वेय (य) न्ति
विद् (धातु) विज्जइ, विज्जए, निव्विज्जइ; निव्विज्जे, निव्विद, निव्विण्ण
विदिसा विदिश्
विद्राय् (धातु) विद्रायमाण, (विद्वांसो वयमित्येवमात्मानं मन्यमानाः —व्याख्या)
विन्नाण विज्ञान
विन्नयर्–विज्ञातृ
विन्नु विज्ञ
विप् (धातु) परिवेपमाण, पवेवन्ति
विपास्सिण्–(विदर्शिन्)
विप्परिणाम विपरिणाम
विप्परियास विपर्यास
विप्पिय विप्रिय
विमोक्खण विमोक्षण
विमोह विमोक्ष
१ **वियड** विकट
२ **वियड** विकृत
वियन्त-कारग व्यन्तिकारक
वियाघाय व्याघात
विरइ विरति
विराग —
विरूव विरूप
विलुंपयित्तर् } विलुम्पयितृ
विलुंपित्तर् }
विवाय विवाद
विवेग विवेक
विश् (धातु) पविट्ठयर (ग), निविट्ठ, विनिविट्ठ; पविसए, पविसि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्सामो, पविस्स, पवेसिया, अणुपविसित्ता
विसंहण विश्रम्भण
विसय विषय
विसाण विषाण
विसोग विशोक
विसोत्तिया विस्रोतसिका
विस्संभणया विश्रम्भणता
विस्सेणी विश्रयणी
विह विख
विहार —
विहि विधि
विहारिण्- विहारिन्
विहिंसा —
विहिंसग विहिंसक
वीइमिस्स व्यतिमिश्र
वीर —
वीराय् (धातु) वीरायमाण (अ-वीरा वीरा-भवित्ता)
वीरिय वीर्य
वीहि वीथि
वुक्कम व्युत्क्रम
वुड्ढि वृद्धि
वृ (धातु) पाउणिस्सामि, पाउड; निवारेइ, निव्वुड, अभिनिव्वुड, परिनिव्वुड, संवुड
वृज् ,, वज्जिज्जा, वज्जन्त, वज्ज, परिवज्जए, परिवज्जियाणं,
वृत् ,, अइवत्त (इ)इ०, वत्त(इ)ज्ज, तिउट्टइ, तिउट्ट; तुट्ट आउट्ट वट्ट, नियट्टन्ति, नियट्टमाण, अभिनिव्वत्तेज्जा, विनियट्टमाण; अणुपरियट्टइ, ०यट्टमाण; वियत्तूण, विउट्टाणं, वियइत्ता; संवट्टेज्जा, संवट्टइत्ता, संवट्टत्ता
वृध् ,, वड्ढइ, वड्ढइ, अभिसंवुड्ढ
वेय वेद
वेयण वेदन
वेयवंत्- वेदवन्त्-
वेयावडिय वैयापृत्य
वेर वैर
वेवय वेपक
व्यथ् (धातु) पव्वहिय
व्यध् ,, संविद्ध, वहिय
व्रज् ,, परिव्वयन्ति, परिव्वए; परिव्वएज्जासि, पव्वइय
व्ली ,, अल्लीण, अलीण

शंस् (धातु) पसंसिय
शक् ,, सक्खामो, सक्कं, सक्का
शत् ,, आसाएज्जा, (संस्कृत-आ-शातयत्) अणासायमाण, ०माण
१ शम् ,, सन्त, समिय, समेमाण
२ शम् ,, सुनिसन्त (सं० सुनि-श्रान्त) निसम्म, निसामिया, निसामेत्ता
शिक्ष् ,, सिक्खेज्जा, सुसिक्खेज्जा, सुसिक्खे
शिष् ,, विप्पसिट्ठ, परिसिट्ठ, सु-विसिट्ठ
शी ,, सए
शुच् ,, सोयइ, सोएज्जा, सोयए, अणुसोयन्ति
शुध् ,, सुद्ध, सुविसुद्ध
श्रद्-धा ,, सद्दहे
श्री ,, सिय अणुसिय, अणुस्सिया, अणुसियत्ति, समुस्सणामि, ०णोमि, समुस्सिणासि, ०णासि, ०णाइ; निस्सिय
श्रु ,, सुणइ, सुणेइ सुणेह, सुण-माण, सुय, दुस्सुय, सुणिया, सोचा; सस्सूस, सुस्सूसमाण

ष्वष्क् ,, अवसक्केज्जा

---

१ स, से, सो सः (तत् सर्वनाम, पुंलिङ्ग-प्रथमैकवचन)
२ स सहार्थक
३ स स्व
सइं सकृद्
संवच्छर संवत्सर
संसप्पग संसर्पक
संसय संशय
संसार —
संसेय संस्वेद
संसोहण संशोधन
संहारण —
सक्कि सक्ति
संकप्प संकल्प
संकमण संक्रमण
संखडि संस्कृति
संग —
संगंथ संग्रन्थ
संगाम संग्राम
संघाडी संघाटी
संघाय संघात
सच्च सत्य
सञ्ज् (धातु) सज्जेज्जा, सत्त
संजोग संयोग
सड्ढिण्- श्राद्धिन्
सढ शठ
सत्त सत्त्व
सत्ता —
सत्ति शक्ति
१ सत्थ शस्त्र
२ सत्थ शास्त्र
सत्थर्- शास्तृ
सद् (धातु) सन्न, अवसीयमाण, आसज्ज; निसिएज्जा, समासज्ज, निसण्ण, विप्पसायए, विसीयमाण, विसण्ण
सद्द शब्द
सद्धा श्रद्धा
सद्धिं सधीम्
सन् (धातु) अपज्जवसिय, पज्जव-सिय, सपज्जवसाण
संताणग सन्तानक
संति शान्ति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संतेगइय सन्त्येक-
संथर संस्तर
संथव संस्तव
संथारग संस्तारक
संथुय संस्तुत
संधण सन्धान
संधि —
सन्ना सञ्ज्ञा
संनिचय —
संनिवेस संनिवेश
संनिहाण संनिधान
संनिहि संनिधि
सप्पिण्- सर्पिन्
सबलत्त शबलत्व
सभा —
सम —
समंजस —
समण श्रमण
समणुन्न समनुज्ञ
समय —
समया समता
समायाण समादान
समायार समाचार
समारंभ —
समाहि समाधि
समियं, ०या सम्यक्
समुट्ठाइण्- समुत्थायिन्
समुप्पाय समुत्पाद
समुस्सय समुच्छ्रय
संपसारग संप्रसारक
संपाइम संपातिम
संफास संस्पर्श
संवाह सम्बाध
संवाहण सम्बाधन
सम्मइ सम्मति
सम्मइया सम्मतिता
सम्मं सम्यक्
सम्मत्त सम्यक्त्व
सम्मुइ सम्मुति
सम्मुइया सम्मुतिता
सम्मुच्छिम सम्मूर्च्छिम
१ सय शय
२ सय स्वक
१ सयण शयन
२ सयण स्वजन
सयं स्वकम्
सययं सततम्
सया सदा
सर स्मर
१ सरण शरण
२ सरण स्मरण
१ सरणया शरणता
२ सरणया स्मरणता
सरीर शरीर
सरीरग शरीरक
सल्ल शल्य
सवण श्रवण
सव्व सर्व
सव्वओ सर्वतस्
सव्वत्त सर्वत्व
सव्वत्थ सर्वत्र
सव्वया सर्वदा
सव्वसो सर्वशस्
सव्वावन्त्- सर्वावन्त्
सस्सय दृष्टव्य सासय
सह् (धातु) सहइ, सहए
१ सह —
२ सह स्वक (सह सम्मइ-याः=स्वकसन्मत्या)
सहसाकारय् (धातु) सहस-कारेह
सहि सखि
साइण्-शायिन्
साइम स्वादिम
सागारिय सागारिक
साड शाट
साध् (धातु) साहेइ, साहइ, साहिस्सामो, साहिय
सामग्गिय सामग्र्य
सामत्त श्यामत्व
सामिण्- स्वामिन्
साथ सार्थ
१ सार —
२ सार स्मार
सारग स्मारक
साला शाला
सासय शाश्वत
साहम्मिय साधर्मिक
साहारण साधारण
साहु साधु
सिंग शृङ्ग
सिच् (धातु) संसिचमाण, सं-क०, संसिचियाणं
सिढिल शिथिल
सिणाण स्नान
सिद्धि —
सिध् (धातु) निसिद्धा, पडिसेहिय
सिर शिरस्
सिलिवइण्- श्लीपदिन् (श्लीपदं पादादौ काठिन्यम्—व्याख्या)
सिलोग श्लोक
सिसिर शिशिर
सिस्स शिष्य
सीय शीत
सील शील
सीलमंत शीलवन्त
सीव् (धातु) सिविस्सामि, सीवि०
सीस शीर्ष
सु —
सुअर —
सुकरण —
सुक्क शुष्क
सुक्किल शुक्ल
सुट्ठु सुष्ठु
सुणग शुनक
सुणिम ...

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुण्हा स्नुषा
सुत्त सूत्र
सुन्न शून्य
सुप् (धातु) सुत्त
सुब्भ शुभ्र
सुब्भि सुरभि
१ सुय श्रुत
२ सुय सुत
सुरभि —गन्ध
सुवसु —
सुव्वय सुव्रत
सुसाण श्मशान
सुह सुख
सुहुम सूक्ष्म
सूइ सूचि
सूइय सूच्य; अथवा सूपिक
सूणिय शूनिक
सूर शूर
सृ (धातु) पसारए, पसारेमाणे, पसारिय, पसारेत्तु, संपसारए; अणुसंसरइ
सृज् ,, वोसिरे, वोसट्ठ, विओसज्ज, ०सिज्ज, ०सेज्ज, वोसज्ज, आणिसट्ठ
सेज्जा शय्या
सेय श्रेयस्
सेव् (धातु) सेवइ, ० ए, सेवन्ति, सेवेज्जा, सेवित्था, सेविंसु, सेवित्ता, आसेवइ, ० ए, आसेवित्ता, पडिसेवे, पडिसेवमाण
सेस शेष
सेहि (सिद्धि)
सोणि (णी) **य** शोणित
सोत्त श्रोत्र
१ सोय शौच
२ सोय श्रोत्र
३ सोय स्रोतस्
सोयविया शौचवता
सोलस षोडश
सोवाग श्वपाक
सोहि शोधि
स्खल् (धातु) खलयिंसु
स्तन् ,, थणंति
स्तभ् ,, ओट्ठंभियाए, ओट्ठंभिया
स्तृ ,, संथरए, संथरेज्जा, संथरित्ता
स्था , चिट्ठइ, चिट्ठे, चिट्ठेज्जा, ठाएज्जा, चिट्ठंत-, अचिट्ठंत, ठिय, ठावए; उट्ठिय, अणुट्ठिय, उट्ठाए, उट्ठाय; समुट्ठिय, समुट्ठाय, उवट्ठिय, अणुव०; परिट्ठवेज्जा, परिट्ठवेत्ता, विपरिचिट्ठइ; विट्ठिय, परिविचिट्ठइ
स्पंद् ,, विप्फन्दमाण
स्पृश् ,, फुसन्ति, फासए, पुट्ठवन्त-, पुट्ठ
स्पृह् ,, पीहए
स्फुट् विफुडमाण
स्मृ ,, स (म) रन्ति, अणुसंसरइ
स्नु ,, वीसवन्त
स्वाद् ,, साइज्जइ, साइज्जिस्सामि, साय, असाय, अस्साय
हंता हन्त
हंभो —
हणु हनु
हणुय हनुक
हत्थ हस्त
हन् (धातु) हणंति, हणिया, हणे, हण, हणह, हणंत-, हंतव्व, हय, (हओवहय); हम्मइ, हन्नइ; आहंतु उवहय, निहणिज्ज, निहणिंसु, अविहम्ममाण,
हंतर- हन्तृ
हरय हद
हरिय हरित
१ हव्व अर्वाक्
२ हव्व हव्य
१ हस्स हर्ष
२ हस्स, हु० ह्रस्व
हा (धातु) जहाइ, जहंति, जहाहि, हीण, जहित्ता, विज०, हिच्चा; परिहायमाण, अप०, अपरिहीण, पहाय, विप्पजढ, विजहित्ता, वियाहित्तु
हार —
हालिद्द हारिद्र
१ हास हर्ष
२ हास —हास्य
हि —
हिंस (धातु) हिंसइ, हिंसन्ति, हिंसिस्सन्ति, हिंसिंसु, अहिंसमाण; विहिंसइ, विहिंसन्ति, अविहिंसमाण
हिंसा —
हिमग हिमक
हिमवाय हिमपात
हिय हृद्
हियय हृदय
हिरण्ण हिरण्य
हिरिण- (ह्रीमन्)
हिरी ह्री
हु खलु
हुं ...
हुरत्था हुरस्तात्
हुस्स ह्रस्व
हृ (धातु) अभिहड, अवहरन्ति, आहरे, आहड, आहट्टु, आहारेमाण, उदाहरन्ति, उदाहड, परिहरन्ति, परिहरेज्जा, परिहरन्त, विहरे, विहरित्था, विहरिंसु, विहरन्त, विहरमाण, विहरेज्जा
हृष् (धातु) हरिसे
हेउ हेतु
हेमंत हैमन्त
होट्ठ हु० ओष्ठ
ह्नु (धातु) निण्हवइ, निण्हवेज्जा
ह्री ,, अहिरीमाण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कतिपया विशिष्टाः पाठ-भेदाः ।

पृ. १. पं. १. आउसंतेणं; आमुसंतेणं; आवसंतेणं.
,, १०. अणुसंचरइ, **स्थाने** अणुसंसरइ.
,, १६. सन्वेइ **स्थाने** सन्धावइ.
,, १७. मोयणाए **स्थाने** भोयणाए.
पृ. २. पं. २४. नियाग **स्थाने** नियाय; निकाय.
,, २६. वियहित्तु विसोत्तियं **स्थाने** विजहित्ता (वियहियं, वा) पुव्वसंजोगं.
पृ. ३. पं. ३. सत्थं चेत्थ **स्थाने** पासं चेत्थं.
,, ७. पासमाणे रूवाइं **स्थाने** पासमाणो पासिमाइं; सुणमाणे सद्दाइं **स्थाने** सुणमाणो सुणिमाइं.
पृ. ४. पं. २३. एजस्स **स्थाने** एयस्स; एगस्स.
,, २७. इह **स्थाने** इति.
पृ. ५. ,, २०. चित्ते **स्थाने** चिट्ठे
,, २१. सत्थे **स्थाने** सत्ते
,, २२. माणवाणं **स्थाने** असमंजयाणं.
,, २३. परिन्नाणेहिं **स्थाने** पन्नाणेहिं.
पृ. ६. पं. १०. जावसोत्तपरिन्नाणेहिं **अपरिहायमाणेहिं स्थाने** जाव सोत्तपन्नाणा **अपरिहीणा**.
,, १५. **क्वचित्** वि एगे **नास्ति.**
,, २३. विणइत्तु **स्थाने** विणा वि.
,, २६. **क्वचित्** णाइबले **अग्रे** सयणबले **अधिकपाठः**
,, २७. दण्ड-समायाणं **स्थाने** दण्डं समारभइ; भया दण्ड-समायाणं सपेहाए; **इति वा.**
,, ३२. से असइं **इत्यादि पाठस्थाने** 'एगमेगे खलु जीवे अईयद्धाए असइं-उच्चागोए असइं नीया-गोए; कण्डगट्ठ-याए नो हीणे नो अइरित्ते.' **एतादृशो नागार्जुनीयः पाठः ।**
पृ. ७. पं. २. **क्वचित्** सायं **नास्ति । तथैव** 'पुरिसेण खलु दुक्खुव्वेगसुहेसएणं पुव्विं ताव जीवाभिगमे कायव्वे **जाव** इच्छियाणिच्छियं सायासायं वियाणित्ता हिंसोवरई कायव्वा' **एतादृशो नागार्जुनीयो पि पाठभेदः ।**
,, १४. पियाउया **स्थाने** पियाययया.
पृ. ८. पं. १४. वीरे पसंसिए **स्थाने** धीरे **तथा** नमंसिओ.
,, १६. पडिसेहिओ **स्थाने** पडिलाभिओ.
,, १८. ०रूवेहिं सत्थेहिं **इत्यादि पाठस्थाने** सत्थेहिं विरूव-रूवाणं अट्ठाए, तं-जहा **एषः पाठः ।**
,, २३. अयं सन्धीति० **स्थाने** अयं सन्धि अदक्खु.
पृ. ९. पं. ६. अन्नहा णं पासए **स्थाने** अन्नयरेण पासएण.
,, २५. से तं जाणह, जमहं बेमि **स्थाने** से एवमायाणह जं बेमि.
पृ. १०. पं. ९. दिट्ठ-भए **स्थाने** दिट्ठ-पहे.
,, १४. तम्हा वीरे न रज्जइ **स्थाने** तम्हादेव विरज्जए.
,, २१. **क्वचित्** एस वीरे पसंसिए **नास्ति. क्वचित्** सुवसु वीरे प०
पृ. ११. पं. २. ...आवट्टं अणु० **स्थाने** दुक्खावट्टमेव अणु०.
,, ७. आयवं नाणवं **स्थाने** आयवी नाणवी.
,, ११. माराभिसंकी **स्थाने** मारावसक्की,
,, २५. कम्म-मूलं च जं **स्थाने** कम्ममाहु य जं.
,, २९. मइमं **स्थाने** मेहावी.
पृ. १२. पं. १३. अग्गं च **इत्यादि स्थाने क्वचित्** मूलं च अग्गं च विएत्तु वीरे, **इति तथैव** मूलं च अग्गं च विएत्तु वीरे, कम्मासवं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेइ विमोक्खणं च. **इति नागार्जुनीयः पाठभेदः ।**

,, **२६.** नाणुजाणए अग्रे **क्वचित्** छणन्तं नाणुमोएय **अधिकः पाठः ।**

,, **३०.** निसण्णो पावेहिं कम्मेहिं **स्थाने** तेसु कम्मेसु पावं.

पृ. १३. पं. १. गामी **स्थाने** गामं.

,, **१३.** धीरे **स्थाने** वीरे. **तथा**

विसय पञ्चगम्मि वि
दुविहम्मि तियं-तियं
भावओ सुट्ठ जाणित्ता
से न लिप्पइ दोसु वि.
(१ विसयम्मि पञ्चगम्मि इत्यपि प्रत्यन्तरे)

इत्येवंरूपो नागार्जुनीयः पाठभेदः ।

,, **१९.** अवरेण पुव्वं न सरन्ति एगे **इत्यादि पंक्तिस्थाने**

अवरेण पुव्वं किह से अईयं
किह आगमिस्सं न सरन्ति एगे;
भासन्ति एगे इह माणवा उ (ओ)
जह से अईयं तह आगमिस्सं ।

एवंरूपाः पंक्तयः ।

,, **२३.** अट्ठं **स्थाने** अत्थं; अट्टं **वा पाठः ।**

पृ. १४. पं. २. दुक्ख-मत्ताए **स्थाने** दुक्खमायाए; धम्ममायाव. **इति वा पाठः ।**

,, **६.** **चूर्णिपुस्तके** उवरय **जाव** समुट्ठिए **पाठो नोपलभ्यते ।**

,, **१९.** **क्वचित्** मारं **स्थाने** मरणं; **क्वचिच्च** मारं च मरणं च **उभयमपि ।**

पृ. १५. पं. १. नो लोग० **एतद्वाक्यस्थाने** नो य लोगेसणं चरे.

,, **४.** जयमाणे धीरे **स्थाने** जयाहि एवं.

,, **८.** आघाइ **स्थाने** अक्खाइ. **तत्रैवैवं नागार्जुनीयः पाठभेदः**—आघाइ धम्मं खलु से जीवाणं, तं-जहाः संसारपडिवन्नाणं मणुस-भवत्थाणं आरम्भविणईणं दुक्खुव्वेग-सुहेसगाणं धम्मसवण-गवेसगाणं निक्खित्त-सत्थाणं सुस्सुसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विन्नाणपत्ताणं.

,, **१५.** पुट्ठो पुट्ठो **इत्यादि पंक्तिस्थाने एतादृशं पाठान्तरम्**—एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेययन्ति;

चित्तं कूरेहिं कम्मेहिं चित्तं परिविचिट्ठइ;
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं नो चित्तं परिवि चिट्ठइ.

,, **२४.** ते एवं वयासि **स्थाने** एवमाइक्खन्ति.

,, **२५.** **चूर्णिपुस्तके** अणायरियवयणमेयं **नास्ति.**

,, **३०.** पावाउया **स्थाने चूर्णिपुस्तके** समणा माहणा.

पृ. १७ पं. १. तम्मंसि **स्थाने** तं अस्स.

,, **९.** कम्मुणा सफलं **स्थाने** कम्माण सफलत्तं.

,, **१५.** आवन्ती **इत्यादिवाक्यस्थाने नागार्जुनीयमेतादृशं पाठान्तरम्**—जावन्ति केइ लोए छक्काय-वहं समारभन्ति अट्ठाए अणट्ठाए वा

,, **२१.** मरणाइ एइ **स्थाने** मरणादुवेइ.

,, **२५.** कट्टु एवमवयाणओ **इत्यादि पंक्तिस्थाने नागार्जुनीयपाठभेदो यथा**-जे खलु विसए सेवइ, सेवित्ता वा नालोएइ परेण पुट्ठो निण्हवइ, अहवा तं परं सएण वा दोसेण पाविट्ठयरएण **वा** दोसेण उवलिंपेज्जा ।

,, **२९.** फासे **स्थाने** मोहे; **क्वचित्** पुणो **अग्रे** संसयं परिजाणओ **विशेषः ।**

पृ. १८. पं. १. पचमाणे **स्थाने** तप्पमाणे.

,, **१६.** छन्द इह माणवा **स्थाने** छन्दाणं इह माणवाणं.

,, **२६.** से सुप्पडि० **एतत्पंक्तिस्थाने** से सुयं अणुविचिन्तिय नच्चा.

,, **३१.** अप्पमत्ते परिव्वए **स्थाने चूर्णिपुस्तके** अप्पमायं सुसिक्खेज्जा.

,, **३२.** अणुवासेज्जासि **स्थाने** अणुपालेज्जासि.

पृ. १९. पं. ८. सिया **स्थाने** चेव; अन्नेसिए **स्थाने** अणुसिसात्ति; अणुसिसत्ता.

१३. जुद्धा० **एतत्पंक्तिस्थाने** जुद्धारियं दुल्लभं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

,, १६. भए **स्थाने** पहे.

पृ. २१. पं. २६. एत्थ विरमेज्ज वेयवी **स्थाने** विवेगं किट्टेइ वेयवी.

,, २७. विणइत्तु **स्थाने** विणएत्ता.

,, २९. वडुमगं **स्थाने** वट्टमगं.

पृ. २२. पं. १४. अणेग-रूवेहिं कुलेहिं जाया **स्थाने** अणेगओ तेसु कुलेसु.

,, १५. रूवेहिं सत्ता **स्थाने** रूवेसु गिद्धा.

पृ. २३. पं. २, पकुव्वइ **स्थाने** पगब्भइ.

,, ७. धूयवायं प० **एतत्पांक्तिस्थाने** धुव; धुय **इति वा पाठः । तथैव** धूयोवायं पवेयइस्सामि **इति नागार्जुनीयमपि पाठान्तरम् ।**

,, १७. चइत्ता पुव्व संजोगं **स्थाने चूर्णिपुस्तके** जहित्ता पुव्वमायायणं.

,, २६. अहेगे धम्ममायाए **स्थाने** सहिए धम्ममायाय.

,, २८. गेहिं **स्थाने** गत्थं; गिद्धिं.

पृ. २४. पं. १४. वीरे **स्थाने** धीरे.

,, १५. एयं खु मुणी **स्थाने** एस मुणी.

,, २१. लाघवस्मा० इत्यादिपंक्तिस्थाने **एतादृशो नागार्जुनीयः पाठभेदः**—एवं खलु से उवगरण-लाघवियं तवं कम्म-क्खयकारणं करेइ ।

,, २२. सव्वओ सव्वत्ताए **स्थाने नागार्जुनीय पाठान्तरं**—सव्वं सव्वत्ताए.

,, २८. संधेमाणे **स्थाने** सन्धणाए; समुट्ठिए **स्थाने** समुट्ठिए.

,, ३०. अणवकंखमाणा **स्थाने** अणवकंखेमाणा (णे); अवयमाणा; इति वा.

पृ. २५. पं. १. तेहिं महावीरेहिं **स्थाने चूर्णिपुस्तके** तेसिं महावीराणं.

,, २. उवलब्भ **स्थाने** पइलब्भ; हिच्चा उव० **इत्यादिवाक्यस्थाने** हिच्चा उवसमं अहेगे फारुसियं समारभन्ति ।

,, १५. जाइं **स्थाने** गब्भाइ.

,, २६. अविहिंसे **इत्यादिशब्दस्थाने** अविहिंसगा. सुव्वया. दन्ता अहेग. पस्स. **इत्येवंरूपाःशब्दाः, तथा—एतादृशो नागार्जुनीयः पाठभेदः—**

" समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू अविहिंसगा सुव्वय दन्ता परदत्त-भोइणो; पावं कम्मं नो करिस्सामो " समुट्ठाए ।

,, ३१. सया परक्कमेज्जासि **स्थाने चूर्णिपुस्तके** सव्वओ परिव्वएज्जासि.

पृ. २६. पं. ६. आइक्खे वि० **एतत्पंक्तिस्थाने नागार्जुनीयमेतत्पाठान्तरम्**—जे खलु भिक्खू बहु-स्सुए बब्भागमे आहरण-हेउं कुप्पले धम्म कहा-लद्धि-सम्पन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज ' के अयं पुरिसे कं वा दरिसणं अभिसंपन्ने ? ' एवं गुणजाईए पभू धम्मस्स आघवेत्तए।

,, २०. तम्हा लूहाओ नो परिवित्तसेज्जा **स्थाने चूर्णिपुस्तके** जंसिमे लूसिणो नो परिवित्तसन्ति **इति पाठान्तरम् ।**

,, २४. विओवाए **स्थाने** वियाघाए, वियावाए, विवायाए, विवाघाए; **इति पाठान्तराणि ।**

,, २७. कालोवणीए० इत्यादि **वाक्यस्थाने नागार्जुनीयाः पठन्ति**—जाइ खलु अहं अपुण्णे आउ-तेउ-कालं करिस्सामि, तो परिण्णा-लोवे अकित्ती दुग्गइ-गमणागमणं च भविस्सइ ।

पृ. २७. प. १३. नो सुय० इत्यादि **शब्दस्थाने चूर्णिपुस्तके** न एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ **एते शब्दाः ।**

,, २०. उदाहिया **स्थाने** उदाहडा.

,, २३. पडिकं **स्थाने** परिकं, पाडियक्कं, पडिइक्कं, पडियक्कं, **पाठान्तराणि; तत्रैव** जीवेहिं कम्मसमारम्भेणं **स्थाने** दण्डं समारभन्ते **पाठान्तरम् ।**

पृ. २८. पं. ३. चेएमि **स्थाने चूर्णिपुस्तके** (कहेमणन्ति) करेमि (तं तु न जुज्जइ).

,, २३. सोच्चावई मेहा० **इत्यादिशब्दस्थाने** सोच्चा मेहावी वयणं प० ।

,, २९. संनिहाण—सत्थस्स **स्थाने चूर्णिपुस्तके** संनिहाणस्स खेयन्ने (अन्नवायणाए) संनिहाणसत्थस्स खे० ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

,, २९. ,, १०. ओम-चेलिए **स्थाने** अवम-चेलए; **चूर्णिपुस्तके** अदुवा अचेले **पाठो नोपलभ्यते.**

,, १७. निस्सेयं **स्थाने** निस्सेसियं; निस्सेयसं; नीसेसं; **इति पाठाः**

,, २२. एवं **स्थाने** य, **अत्रैव टीकाकारसंगृहीतमेतादृशं पाठान्तरम्**:–०गमणाए] तं भिक्खुं केइ गाहावई डवसंकमित्तु बूया: "आउसन्तो समणा! अहं णं तव अट्ठाए असणं वा ४ अभिहडं दलामि।" से पुव्वामेव जाणेज्जा: "आउसन्तो गाहावई! जं णं तुमं मम अट्ठाए असणं वा ४ चेएसि, नो खलु मे कप्पइ एय-प्पगारं असणं वा ४ भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तह-प्पगारए।"

पृ. ३०. ,, ७. एगाणियं **स्थाने** एगागिणं.

,, ११. संचारेज्जा **स्थाने** साहरेज्जा चू०; आसाएमाणे **स्थाने** आढायमी (मा) णे **पाठान्तरं चू. टी. पुस्तके.**

,, २०. पडिलेहिय–इत्यादि **शब्दस्थाने** पडिलेहित्ता संथारगं संथरेज्जा **एतादृशः शब्दभेदः।**

२७. णं एवं **स्थाने** णं भिक्खुस्स एवं। चा एमि **स्थाने** संचा०

,, ३१. ,, २. दलइस्सामि **स्थाने** दाहामि; दासामि, **वा पाठः।**

,, ११. वसुमन्तो **स्थाने** वुसिमन्तो.

पृ. ३१. ,, १२. विइत्ताणं **स्थाने** विगिञ्चित्ता

,, ,, १३. ०पुव्वीए **स्थाने** ०पुव्वियं; कम्मुणाओ **स्थाने** आरंभाओ।

,, १५. अन्तियं **स्थाने** कारणा·

,, २३. तु विन्नाय **स्थाने** वियाणित्ता.

,, २४. तुयट्टेज्जा **स्थाने** तु वज्जेज्जा; निवज्जेज्जा; **वा पाठः।**

,, ३१. पग्गहीय तरं **स्थाने** ०हीय तरगं; ०हीय-तरागं; **वा पाठः।**

पृ. ३२. ,, ११. पादुरेसए **स्थाने** पाउडुएसए.

,, १४. चायतरे **स्थाने** चायतरे.

,, २०. य संखाय **स्थाने** इति संखया.

,, २२. भेउरेसु **स्थाने** भिउरेसु; **तथैव** बहुलेसु वि **इत्यपि पाठान्तरं.**

,, २३. धुवं वण्णं **स्थाने** धुवं अन्नं. **तथैव** सुहुमं वण्णं **इति पाठान्तरं**

,, २६. सव्वट्ठे० **स्थाने** सव्वत्थे०

पृ. ३३. ,, ६. अभिरुज्झ **स्थाने** आरुज्झ, विहरिंसु **स्थाने** वियरिंसु.

,, १४. पुट्ठो वि नाभिभासिंसु **स्थाने** पुट्ठे व से अपुट्ठे वा. **इति चूर्णिसम्मतपाठः। तथैव**

पुट्ठो व सो अपुट्ठो वा।
नो अणुन्नाइ पावगं भगवं।

इति नागार्जुनीयः पाठभेदः।

,, १९. नाइ-सुए **स्थाने** नाइ-पुत्ते

पृ. ३४. ,, ७. अहाकडं **स्थाने** आहाकम्मं

,, १६. खन्धंसि **स्थाने** कट्ठंसि.

,, १८. बहुसो अपडिन्नेणं **स्थाने** अपडिन्नेण वीरेण.

पृ. ३५. ,, २१. पणियसालासु **स्थाने** सालाघरासु

,, २७. 'निद्दं पि नो पगामाए सेवइ य भगवं उट्ठाए' **एतद्वाक्यस्थाने** निद्दावि न पगामा आसी तहेव उट्ठाए **एतादृशो नागार्जुनीयः पाठः।**

,, २९. आसिंसु भगवं उट्ठाए **स्थाने** न चिरं जॉगित्ता ईसिं साइयासि **इति चूर्णिपुस्तके पाठः।**

,, ३१. तस्सुवसग्गा **स्थाने** तत्थुवसग्गा.

पृ. ३५. ,, ४. समिए फासाइं विरूवरूवाइं **स्थाने** सहिए इति मन्ता भगवं अणगारे **इति चूर्णिगतपाठः।**

,, ९. अयमुत्तमे से धम्मे **स्थाने** "को एत्थ साही ठिओ" **एषः पाठः चूर्णिपु०।**

,, १३. पिहिया वा सक्खामो **स्थाने** पिहिया य चाएस्सामो **चूर्णि०**

पृ. ३६. ,, ४. अदु फलेण **स्थाने** अह कुन्ते (न्तए) ण.

,, ६. ओट्ठभियाए **स्थाने** उट्ठंबिया.

,, १७. न से कप्पे **स्थाने** न सेवित्था.

,, २४. अपिवित्था **स्थाने** विहरित्था.

,, ३०. घासमेसे कडं **स्थाने** घासमातं कडं.

,, ३१. सुविसुद्धं **स्थाने** सुविसिट्ठं; ० गयाए सेवित्था **स्थाने** ० गया गवेसित्था **चूर्णि०**

,, ३३. सथयं **स्थाने** सन्थरे.

पृ. ३७. ,, ८. झायइ समाहिमपडिन्ने **स्थाने** झायई समियं पेहमाणो **चूर्णि०**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

SOME INVALUABLE PUBLICATIONS FOR THE STUDENTS PALI AND PRAKRIT.

1. Abhidhanappadipika (A dictionary of the Pali language) by Moggallana Thera, edited in Devanagari with an index of the words by Muni Jinavijaya. 5-0-0

2. Palipathavali,A Pali Reader for beginners,by Muni Jinavijaya 0-12-0

3. Prakritkathasamgraha, A Prakrit Reader for Beginners by Muni Jinavijaya. 0-14-0

4. Kumarapalapratibodha, A rare Prakrit work of very great importance edited by Muni Jinavijaya (Gaekwar Oriental Series.) 7-8-0

5. Chedasutrani (Brihatkalpa, Vyavahara and Nisitha) Three invaluable books of the Jain Canon, edited for the first time in Devanagari. 2-8-0

6. Supasanahacariyam, Life of the Seventh Jain Tirthankara in Prakrit edited with sanskritisation of the Prakrit original. 2-8-0

8. The Date of Haribhadra, An Essay in Sanskrit read before the 1st Oriental Conference, Poona by Muni Jinavijaya. 0-4-3

पाली-प्राकृत-भाषाजिज्ञासूनां कतिपया अत्युपयोगिग्रन्थाः ।

अभिधानप्पदीपिका (पालीशब्दकोष) संपादकः—मुनि जिनविजयः;
प्रका० गुजरात पुरातत्त्वमंदिर, अमदाबाद. मूल्यम् ५-०-०

पाली पाठावली. सं. मुनि जिनविजयः ,, ०-१२-०

प्राकृत कथासंग्रह ,, ,, ०-१४-०

कुमारपाल प्रतिबोधः (प्राकृतभाषामयः सुमहान् बोधप्रदः ग्रन्थः) सं० मुनि जिनविजयः,'गायकवाडस् ओरिएन्टल सिरीज' नामकग्रंथमालायां प्रकटीभूतः। ,, ७-८-०

त्रीणि छेदसूत्राणि (बृहत्कल्प–व्यवहार–निशीथ–नामनि जैनागमरहस्य भूतानि प्राचीनतराणि सिद्धान्तरत्नानि) ,, २-८-०

सुपासनाहचरियं (प्राकृतभाषाग्रथितं सप्तमतीर्थंकरचरित्रम्— संस्कृतच्छायासमन्वितं प्राकृतभाषाजिज्ञासूनामतीवोपकारकं ग्रन्थरत्नम्) ,, ७-८-०

सुरसुन्दरीचरियं (प्राकृतपद्यमयी सरला सरसा सुबोधा कथा) ,, २-८-०

हरिभद्राचार्यसमयनिर्णयः (अद्वितीय ऐतिहासिकनिबन्धः) लेखकः—मुनि जिन विजयः ,, ०-४-०

For books apply to:— प्राप्तिस्थानम्—

The Manager, Bharata Jain Vidyalaya. व्यवस्थापक–भारत जैन विद्यालय,

Poona City. (India) पूना सीटि (दक्षिण)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only